सप्तगिरि
तिरुमल-तिरुपति देवस्थान

विजयवाडा में दि० २–३–७९ ति ति देवस्थान के समाचारकेन्द्र को उद्घाटन करते हुए माननीय देवादायशाखा मत्री श्री वेकटनारायण महोदय ।

ति ति देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी वी आर. के प्रसादजी बेंगुलूर में दि० १२–३–७९ श्री राल्लपल्लि अनंतकृष्णशर्माजी को देवस्थान आस्थान सगीत साहित्य विद्वान के गौरव उपाधि से सम्मान करते हुए ।

दि० १९–३–७९ में ति. ति देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी वी आर के प्रसादजी नूतन निर्मित आफीस भवन में आन्ध्रा बेंक की शाखा को उद्घाटन करते हुए ।
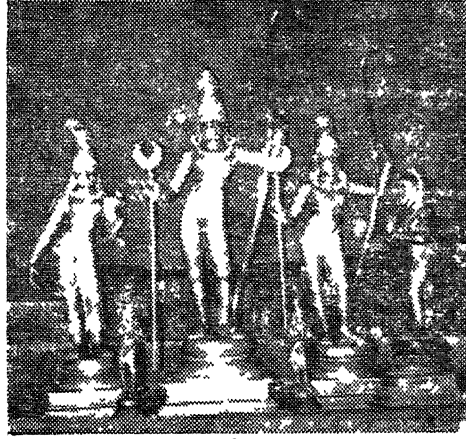
नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय।
देव्यैय तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानीलेभ्यः।
नमोस्तु चन्द्रार्क मरुद्गणेभ्यः ॥

श्रीवेङ्कटेश्वरस्वामीजी का मन्दिर, तिरुमल.

१-३-७९ से

दैनिक पूजा एवं दर्शन का कार्यक्रम

शनि, रवि, सोम तथा मंगलवार

प्रात	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
„	3-30	„	3-45	„	शुद्धि
..	3-45	„	4-30	„	तोमालसेवा
„	4-30	„	4-45	„	कोलुवु तथा पचागश्रवण
„	4-45	„	5-30	„	पहली अर्चना
„	5-30	„	6-00	„	पहलीघटी तथासात्तुमोरै
„	6-00	,	12-00	„	सर्वदर्शन
दोपहर	12-00	„	[illegible]-00	„	दूसरी अर्चना
„	1-00	„	8-00	„	सर्वदर्शन
रात	8-00	„	9-00	„	शुद्धि तथा रात का कैंकर्य
„	9-00	„	12-00	„	सर्वदर्शन
„	12-00	„	12-30	„	शुद्धि
„			12-30	..	एकान्त सेवा

सहस्र कलशाभिषेक के कारण बुधवार

प्रात.	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
„	3-30	„	3-45	„	शुद्धि
„	3-45	„	4-30	„	तोमाल सेवा
„	4-30	„	4-45	„	कोलुवु तथा पचाग श्रवण
„	4-45	„	5-30	„	पहली अर्चना
„	5-30	„	6-00	„	पहलीघटी तथासात्तुमोरै
„	6-00	„	8-00	„	सहस्र कलशाभिषेक
„	8-00	रात	8-00	„	सर्वदर्शन
रात	8-00	„	9-00	„	शुद्धि
„	9-00	„	12-00	„	सर्वदर्शन
„	12-00	„	12-30	„	शुद्धि

तिरुप्पावडा के कारण गुरुवार

प्रात:	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
„	3-30	„	3-45	„	शुद्धि
प्रात	3-45	से	4-30	तक	तोमाल सेवा
„	4-30	„	4-45	„	कोलुवु, तथा पंचागश्रवण
„	4-45	„	5-30	„	पहली अर्चना
„	5-30	„	6-00	„	पहली घटी, बाली तथा सात्तुमोरै
„	6-00	„	8-00	„	सडलिपु, दूसरी अर्चना तिरुप्पावडा, अलकरण घंटी इत्यादि
„	8-00	रात	8-00	„	सर्वदर्शन
रात	8-00	„	10-00	„	शुद्धि इत्यादि पूलगि समर्पण रात का कैंकर्य, घटी
„	10-00	„	12-30	„	पूलगि सेवा (अर्जित)
„	12-30	„	12-45	„	शुद्धि
„			12-45	..	एकात सेवा

अभिषेक के कारण शुक्रवार

प्रात.	3-00	से	3-30	तक	सुप्रभात
„	3-30	„	5-00	„	सडलिपु का नित्य कैंकर्य (एकात)
„	5-00	„	7-00	„	अभिषेक (अर्जित)
„	7-00	„	8-30	„	समर्पण
„	8-30	„	9-30	„	तोमाल सेवा अर्चना, घंटी बालि तथा सात्तुमोरै
„	9-30	„	10-00	„	दूसरी घटी, सात्तुमोरै
„	10-00	रात	8-00	„	सर्वदर्शन
रात	8-00	„	9-00	„	शुद्धि, रात का कैंकर्य
„	9-00	„	12-00	„	सर्वदर्शन
„	12-00	„	12-30	„	शुद्धि
„			12-30	...	एकात सेवा

सूचना : १ उक्त कार्यक्रम किसी त्योहार तथा विशेष उत्सव दिनो के अवसर पर समयानुकूल बदल दिया जायगा । २. सुप्रभात दर्शन केलिए सिर्फ रु २५/- टिकैटवालो को ही अनुमति मिलेगी । ३. रु २५/- के टिकेट तिरुमल मे तथा आन्ध्रा बैंक के सभी शाखाओ मे मिलेगी । ४ सेवानंतर टिकेट को रद्द कर दिया गया । ५. प्रत्येक दर्शन के टिकेटवालो को पहले के जैसे ध्वजस्थभ के पास से नही, बल्कि महाद्वार से क्यू मे मिलाया जायगा । ६. रु २००/- के अमत्रणोत्सव टिकेट पर दो ही व्यक्तियो को भेजा जायगा । ७. अर्चना, तोमाल सेवा, एकातसेवा मे दर्शनानंतर टिकेट या रु. २५/- का टिकेट नही बेचा जायेगा ।

—पेष्कार, श्री बालाजी का मदिर, तिरुमल.

सप्तगिरि

अप्रेल १९७९ वर्ष ९ अंक ११

एक प्रति .... रु. ०–५०
वार्षिक चंदा .... रु. ६–००

गौरव सपादक
श्री पी. .वी आर. के. प्रसाद
आइ. ए यस्,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति ति. दे. तिरुपति.
दूरवाणी २३२२

सपादक, प्रकाशक
के. सुब्बाराव, एम. ए,
तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति.
दूरवाणी २२५४.

मुद्रक
एम्. विजयकुमाररेड्डी,
मनेजर, टी. टी. डी. प्रेस, तिरुपति
दूरवाणी २३४०.

मुखचित्र: नागलापुर मे विराजमान श्री वेदवल्ली सहित श्री वेदनारायण स्वामीजी (ऊजल सेवा–ब्रह्मोत्सव के समय)

ति. ति. देवस्थान ने ताल्लपाक ग्राम को दत्तक ग्रहण की। असल में दत्तक ग्रहण का क्या अर्थ होता है? सतानविहीन आदमी, जिसे अपने वश तथा जायदाद की वृद्धि करनेवाले बच्चे न हो तो अपने इच्छुक किसी दूसरे परिवार के बच्चे को उत्तराधिकारी के रूप में अपनाकर लौकिक तथा पारलौकिक कामों का साधन बनाना ही कहलाता है। अब उसी व्यक्ति के स्थान में श्री बालाजी और उनकी व्यवस्था मौजूद है। दत्तक ग्रहण लेने की यही योगाता श्री अन्नमाचार्य जी के जन्म स्थान ताल्लपाक ग्राम को है यह कहाँ तक ठीक होगा? इस पर संदेह प्रकट करनेवाले कुछ लोग होंगे अवश्य ही। परंतु गहरे से सोचने पर ही इसका अर्थ समझ में आयेगा और इसकी प्रशसा करनेवाले लोग ही ज्यादा होंगे। आपस की बात हैं कि श्री बालाजी को अन्नमाचार्य तथा देवस्थान को ताल्लपाक ग्राम के सिवा दत्तक ग्रहण लेने का और कोई चीज नही होगी। स्वामीजी के नदकांश से पैदा होकर, सोलहवी वर्ष में बालाजी क साक्षात्कार प्राप्त किया। तथा भगवान बालाजी की स्तुति करके तेलुगु, साहित्य को शृंगार तथा अध्यात्मिक पदों से भरपूर कर दिया। इतना ही वही, अपने कवि सहज आत्मविश्वास से भगवान बालाजी को चुनौती भी दिया कि "मुझसे ही तुम्हें यश मिलेगा।" इसके अलवा शृंगार पदों में नायिका भाव से और वात्सल्य पदों में यशोदा जैसे पूरा तनमन लीन होकर उदात्त भावुकता से भगवान की प्रार्थना की। ऐसे महान भक्त को भगवान के दत्तक पुत्र कहने में आश्चर्य ही न होंगा। हर एक भगवान को उसी प्रकार के भक्त हो सकते हैं, फिर भी श्री बालाजी के लीला विनोद केलिए, अपनी कल्पनायुक्त बुद्धि से एक सरस साहित्य विश्व की सृष्टि करके उनको समर्पित किये हुए अन्नमय्या को, उसे पिता के पुत्र ही कहने मे गलत न होगी। मानव के जन्म के लिए एक जगह होना ही चाहिए। अन्नमय्या को वह जगह ताल्लपाक रही। स्वामीजी की सेवा में कृतार्थ उन वंशजों के जन्मस्थल को देवस्थान दत्तक ग्रहण करना, इस रूप में अपना आभार प्रकट करना ही होगा। इस ग्राम को सभी सुविधाओं से प्रबध करके, एक पुण्य अध्यात्मिक क्षेत्र के रूप में उस महान पुरुष को स्मरणात्मक योग्य बनाने से, और एक सुदर तिरुवायूर बनेगा। तभी देवस्थान का आशय सफल होगा।

अज्ञान, दरिद्रता, हो अंधकार से भरपूरा इस देश में ऐसा एक ग्राम का उद्धार हो भी तो हर्ष की बात होगी। हमारी सस्कृति को जीवित रखने के लिए जितने भी महान-पुरुष अनवरत प्रयास करके अपने सर्वस्व खो चुके थे, उनको हमें भूलना नहीं चाहिए। वाल्मीकी और व्यास के बारे में हमें कुछ समाचार प्राप्त न होने पर भी, अपने मधुर सगीत साहित्य से पत्थरों को पिघलानेवाले प्रमुख भक्त कवि सूरदास, तानसेन, मीरा, तुलसीदास, पुरंदरदास, रामदास, श्यामशास्त्री, मुत्तुस्वामी दीक्षितुलु को जिन्हें हम वर्ष में एक बार नाम लेते हैं, अगर उनके जन्मस्थल के समाचार ग्रहण करके, वहाँ के राज्य या जनहितैषी सस्थाएँ उन प्रदेशों को ऐतिहासिक प्रसिद्ध या महान् रूप से स्मरणात्मक बनाने की चेष्टा करें ती प्रशंसनीय बात होगी तभी हमारी सस्कृति चिरकाल तक जीवित रहेगी।

आधुनिक धर्म के सन्दर्भ में ज्ञान-विज्ञान

साहित्यरत्न श्री अर्जुनशरण प्रसाद, एम.ए.,
चक्रधरपुर

इस बीसवी शताब्दी में मनुष्य ने ज्ञान-विज्ञान में काफी उन्नति कर ली है। चन्द्रमा तक तो उसका आवागमन हो ही चुका है, मगल एवं शुक्र ग्रहो तक की भी वह खाक छान रहा है। विज्ञान के करिश्मों के कारण न केवल हमारी पृथ्वी का व्यास सिमट कर अतीव छोटी हो गई वरन आकाश के असख्य ग्रह एव नक्षत्र भी आज अपनी दूरी समेट चुके है।

किन्तु, विज्ञान के आविष्कार जहाँ वरदान हैं, वहीं पर मनुष्य ने अपनी स्वार्थ लिप्सा के कारण उसे अभिशाप में बदल दिया है।

विचार अध्ययन (Thought Reading)

पहले के ऋषि मुनि अपने योगबल से दूसरे के विचारों का अध्ययन किया करते थे। हिप्नोटिज्म के द्वारा उसके अचेतन मन की ग्रन्थियों को खोला करते थे। किन्तु आज आणुविक युग में दूसरे के विचार-अध्ययन की प्रक्रिया अत्यन्त साध्य हो गई है। दूसरे के शरीर या मस्तिष्क से थोडी सी ऊष्मा या गर्मी किसी आणुविक कम्प्युटर में भर दें और उसके विचारो को अन्तरिक्ष में गुजाते रहे। विचार अध्ययन (Thought Reading) की यह प्रक्रिया आज इतनी सरल हो गई है कि प्रत्येक मनुष्य के विचारों को पढा जा सकता है। प्रत्येक देश इस पर प्रयोग कर रहा है। आणुविक आविष्कार की यह प्रक्रिया जहाँ आज इतनी सहल हो गई है वही मनुष्य आज इसे दूसरों को तंग करने के लिए इस प्रक्रिया को अपना रहा है। दूसरे की भावनाओं को न्युक्लीअर आविष्कारों के जरिए आज मनुष्य अध्ययन कर अपना मनोरंजन कर रहा है एव उस पर राजनीति भी करने लगा है। इसका नतीजा यही हो रहा है कि मनुष्य स्वयं तो अपनी आन्तरिक शाति खो ही रहा है दूसरो की शांति को भी खतम कर रहा है।

सूक्ष्म शरीर का स्थूल शरीर से पृथक्करण

योग प्रक्रिया में ऋषि मुनि एवं साधक साधना की चरमावस्था में ऐसा किया करते थे। केवल शरीर को पृथक ही नहीं किया करते थे, वरन अपने सूक्ष्म शरीर से लोक-लोकान्तरों का भ्रमण भी कर आया करते थे। किन्तु, आज के आणुविक आविष्कार ने इसे इतना सरल बना दिया है कि एक दो आणुविक शाँक अगर सोई हुई अवस्था मे आपको दे दिया जाय तो आपका सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से पृथक होकर सूक्ष्म लोक की थोडी सैर अवश्य करवा देगा। भले ही इसमें आपको कष्ट हो, भले ही आपकी चेतना फिर स्थूल शरीर में वापस नहीं आये। किन्तु, आणुविक प्रयोग कर्त्ता का उसमें मनोरंजन तो होता ही है। जिस प्रक्रिया को साधक वर्षो की साधना के पश्चात सीखा करते थे उसे आज के आणुविक युग में बनावटी तरीके (Artificial Method) से अपनाया जा रहा है।

निद्रा में विचार अध्ययन:—

आप कहीं भी रहे आपकी छाया को आणुविक यन्त्र पर बुलाकर कर आप की बात-

गीता यज्ञ के अवसर पर स्वामी चिन्मयानद को पुष्पमालाकृत करते हुए ति ति. दे के. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी वी. आर के प्रसाद जी

श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी का मंदिर
नारायणवनम्, [ति. ति. देवस्थान]

दैनिक-कार्यक्रम

१.	सुप्रभात	प्रातः	६–३० से	प्रात.	७–०० तक	
२.	मदिर के दर्वाजे खोलना	,,	७–००			
३.	विश्वरूप सर्वदर्शन	,,	७–०० से	,,	८–३०	,,
४.	तोमालसेवा	,,	८–३० ,	,,	९–००	,,
५	कोलुवु & अर्चना	,,	९–०० ,,	,,	९–३०	,,
६.	पहली घटी, सात्तुमोरै	,,	९–३० ,,	,,	१०–००	,,
७.	सर्वदर्शन	,,	१०–०० ,,	,,	११–३०	,,
८.	दूसरी घटी अष्टोत्तरम् (एकांत)	,,	११–३० ,,	मध्याह्न	१२–००	,,
९	तोर्मानम्	मध्याह्न	१२–००			
१०	मदिर के दर्वाजे खोलना	शाम	४–००			
११.	सर्वदर्शन	,,	४–०० से	शाम	६–००	,,
१२	तोमाल सेवा & अर्चना	शाम	६–०० ,,	,,	६–३०	,,
१३	रात का कैंकर्य तथा सात्तुमोरै	,,	६–३० ,,	रात	७–००	,,
१४.	सर्वदर्शन	रात	७–०० ,,	,,	८–४५	,,

अर्जित सेवाओं की दरें

१	अर्चना & अष्टोत्तरम्	रु	१–००
२.	हारति	रु.	०–२५
३.	नारियल फोडना	रु.	०–१०
४	सहस्र नामार्चना	रु.	५–००
५	पूलगि (गुरुवार)	रु.	१–००
६.	अभिषेकानतर दर्शन (शुक्रवार)	रु.	१–००
७.	वाहनम् (वाहन वाहको के किराये बिना)	रु	१५–००
८.	सिंगमोरै, तेल खर्च	रु	२–५०

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति ति, देवस्थान, तिरुपति.

चीत को सुना जा सकता हैं, आपसे गुप्त बातों की जानकारी ली जा सकती है। एक यन्त्र पर आपकी छाया तैरती रहेगी दूसरे यन्त्र पर प्रयोगकर्ता आपसे प्रश्न पूछते जायँगे और आपका उत्तर सुनते जायँगे। चीन का यह आधुनिक आणुविकतम आविष्कार है और इस प्रकार के यन्त्र आज सी पी एम के यहाँ भरे हुए है। जिस प्रयोग को पहले प्लांचेट पर अपना कर मृतात्मा का आह्वान किया जाता था तथा ऑटोमेटिक राइटिंग इत्यादि प्रक्रियाओं द्वारा मृतात्मा से सलाप किए जाते थे उस प्रयोग को आज आणुविक यन्त्र पर अपना कर लोगों को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

उदाहरणार्थ सोई हुई अवस्था में किसी की आत्मा या सूक्ष्म शरीर को आणुविक-मशीन पर बुलाया गया। उसने कहना शुरू किया कि उसके लड़के पहले मिलिटरी में थे उसकी लडकी की शादी अभी नहीं हुई हैं।

जैसा कि वार्तालाप क्रम मे पता चला सोई हुई अवस्था में वर्तमान माननीय प्रधान-मंत्री जी को यन्त्र पर सोई अवस्था में बुलाया गया और उनसे कुछ प्रश्न पूछे गए और उन्होंने कहना प्रारम्भ किया कि नही मै अंडा छूता तक नही हूँ खाने की कौन कहे। इस कथन में अभिवक्ता की अतिशयोक्ति हो सकती है और उसे अतिरंजित कर पेश किया जा सकता है किन्तु है यह सोलहो आने सच्ची बात।

अब मेरी ही बात लीजिए। निद्रावस्था में नितप्रतिदिन आणुविक यन्त्र पर मेरा मानसिक विश्लेषण किया जाता है। (Psychoanalysis) मानसिक विश्लेषण की यह प्रक्रिया बहुत समय से अपनाई जा रही है और वही आज की आणुविक राजनीति का विषय बना दिया गया है।

ऐसे ऐसे सूक्ष्म (Minute and sophisticated atomic machine) यन्त्र हैं तो बडे मार्के की चीज और इजाद भी यह बहुत ही बेहतरीन है। किन्तु उनका सीमित प्रयोग किया जाता तो कितना अच्छा, होता? इन मशीनों का प्रयोग बडे बडे डाक्टरों तथा कानून व्यवस्था के सरक्षको के अन्तर्गत लेना चाहिए था। किन्तु, दुःख का विषय है कि इनका प्रयोग आज खुलकर मनोरंजन के लिए किया जा रहा है। इन अतिसूक्ष्म यन्त्रों और प्रयोगों को चिकित्सा सबंधी अनुसन्धानों, समाज के भ्रष्टाचारी एव दोषी व्यक्तियों के अपराधों का पता लगाने के लिए किया जाता तो कितना अच्छा होता। किन्तु, आज उनका प्रयोग मनोरंजन के लिए आम हो गया है। भारत को भी चाहिए वह इसप्रकार के अति सूक्ष्म यन्त्रों का अनुसन्धान करे।

ज्योति दर्शन —

तीसरा तिल या तृयक नेत्र या शिव नेत्र पर ध्यान केन्द्रित करने से साधक को ज्योति का दर्शन होता है। ईसामसीह ने इसी को (Third eye) थर्ड आई कहा है। किन्तु, आज आणुविक आविष्कार में आपकी दोनों नाक के बीच में भौंहों के नजदीक केवल एक अणु का विस्फोट करा दिया जायेगा और आपको मोमबत्ती की टेम या प्रकाश का दर्शन मिल जायेगा। है न विज्ञान का अद्भुत करिश्मा। बात यही नहीं रूक जाती है। सहस्रार चक्र जो मस्तिष्क में स्थित है वहाँ एक दो अणु विस्फोट करा दिया जायेगा और बनावटी तरीके से आपको विश्वदर्शन का मजा आ जायेगा। चाँद सूरज सितारे और सारा ब्रह्माण्ड आपको चक्कर खाता हुआ प्रतीत होगा। अर्जुन की तरह आप बनावटी श्रीकृष्ण से चिल्ला कर प्रार्थना करने लगेंगे कि मरा मरा, आप अपना विराट रूप खींच लीजिए यदि उनकी मर्जी होगी तो वह अपना विराट रूप खींचेंगे, नही तो आपको उसी स्थिति में मरने के लिए छोड देंगे।

इस तरह विज्ञान मनुष्य के लिए वरदान है तो दूसरी ओर वह अभिशाप भी है। यह मनुष्य है कि उन आविष्कारो का प्रयोग किस रूप में करता है।

यक्षिणी विद्या :—

प्रेतात्मा विद्या के ज्ञाता यक्षिणी विद्या का अभ्यास करते हैं। उन सूक्ष्म लोक के अशरीरी आत्माओ को अपने वश में करके उनसे मनचाहा काम लेते हैं। आपको वे हवा से निकाल कर मिठाई या अन्य पदार्थ उपस्थित कर देंगे। विभिन्न प्रकार के सुगन्धों को लाकर आपके हाथ पर मल देंगे जिनकी सुगन्ध बहुत देर तक आपको मिलती रहेगी।

इस आणुविक युग में आणुविक रसायन का प्रयोग (use of atomic chemistry) न्यूक्लीय यन्त्रों द्वारा वायुमार्ग से आपके नाक में लाकर उपस्थित कर दिया जायेगा। अब यह प्रयोग कर्ता पर निर्भर करता है कि वे आपको सुगन्ध का आभास कराये या। दुर्गन्ध का।

मेरे साथ प्रयोगकर्ता ने बहुत तरह की सडी गली गन्धों का प्रयोग किया। एक बार जब यन्त्रणा (Torture) बर्दास्त से बाहर हो गई तो मै ने गीता पढकर उनको कुष्ट रोगी बनने का शाप दे दिया। फलत· अब लीजिए न मेरे नाक में कुष्टी की गन्ध आने लगी और मुझे कुष्ट रोगी बनाने का आज कल उनका प्रयोग चल रहा है। देखिए वे कहाँ तक सफल होते हैं?

(शेष पृष्ठ ३५ पर)

सत्य – व्रत

श्री आर रामकृष्णा राव,
एम. ए; एलएल. बी,
भिलाई.

काशीपुरी के सदानँद,
राजा उल्कामुख,
'साधु' नामक व्यापारी, और
तुङ्गध्वज नाम का राजा—
असत्य का सामना
सत्य से करके,
सत्य लोक प्राप्त किये!

मै भी,
बचपन से
कईबार
"सत्यनारायण व्रत"
कथा सुना हूँ;
सकल्प लिया और
"व्रत" किया!

किन्तु—
सुबह से शाम तक,
दिन - प्रतिदिन
सत्य का सामना
असत्य से कर रहा हूँ!
कभी उधार के लिये,
किसी समय कोई बहाना,
घर में और बाहर
असत्य बोल ही लेता हूँ!

अतः यह ज्ञात होगया—
"सत्य" के बिना
"व्रत" भी रहा कहाँ?
केवल पकान्न और
"प्रसाद" के सिवाय!!!

तिरुमल-यात्रियों को सूचनाएँ (केशसमर्पण)

केश समर्पण करन का रहस्य मानव के सपूर्ण अहभाव को छोडकर उस मूल विराट की शरण में विनीत भावना से अपने को समर्पित करना ही है। हमारे यहाँ कश समर्पण इसलिए एक प्रचलित प्रथा है।

लेकिन पारंपरिक एव सांप्रदायिक पद्धति में भगवान को केश समर्पण करने से ही मनौती पूरी होगी। यात्रियो की इस प्रमुख मनौती को पूर्ण करन केलिए देवस्थान ने अनेक कल्याण कट्टाओं का प्रबध किया है। यह विषय विशेष रूप से कहने की आवश्यकता नहीं है कि अनधिकारी नाइयों से अन्य जगह सिरमुण्डन कराने से पवित्रता नहीं रहेगी और भक्त की मनौती भी पूरी नहीं होगी। देवस्थान के नियमित नाइयों से सिर मुण्डन करवाने से ही वे केश भगवान को समर्पित किये जायगे।

इसलिए यात्रियो से निवेदन है कि वे केवल देवस्थान के कल्याण कट्टाओ में ही अपने केश समर्पण करे जहाँ पर अनेक अनुभवी नाई रहते हैं और जिस के नजदीक ही नहाने केलिए नियत शुल्क चुकाने पर गरम पानी देने की व्यवस्था भी है। जो यात्री केश समर्पण काटेंज में ही करवाना चाहते है, वे देवस्थान के द्वारा इस का प्रबध कर सकते है।

केश समर्पण केलिए उचित दर पर कल्याणकट्टाएँ तथा काटैजो के पास टिकट बेचे जाते हैं। नाइयों को अलग रूप से पैसे देने की आवश्यकता नहीं है।

कुछ धोखेबाजे व्यक्ति सिर मुण्डन का कम शुल्क लेकर, भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने के वायदे करके यात्रियों को अनधिकारी नाइयों के पास ले जा रहे है।

यात्रियो से निवेदन है कि देवस्थान के कल्याणकट्टाओ को छोडकर अन्य जगह सिर मुण्डन न करवावें। ऐसा करवाने से वे केश भगवान को समर्पित नही समझे जायेंगे और यात्रियों की मनौतियाँ भी पूरी नही होंगी। बालाजी के शीघ्र दर्शन की सुविधा के लिए ति ति देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबध किये गये है, कोई भी व्यक्ति भगवान का दर्शन से शीघ्रतर करवाने में असमर्थ है।

TIRUMALA TIRUPATI DEVASTHANAMS

कार्यनिर्वहणाधिकारी,
ति ति देवस्थान, तिरुपति.

श्री हनुमानजी का लंका नगर प्रवेस

लंकिनी समझ गई कि यही श्री रामचन्द्रजी का दूत श्री हनुमानजी है। उसने हनुमानजी का वन्दन किया और क्षमा याचना कर इस प्रकार कहने लगी।

"तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरीअ तुला एक अग।
तुल न ताही सकल मिली जो सुख लव सतसग ॥"

लंकिनी का विनय युक्त कहना है कि हे तात आपके साथ इस लघु सतसग में मुझे जिस सुख की प्राप्ति हुई है कि इसके समान स्वर्ग और उसके ऊपर के अपवर्ग के सुख भी नहीं है।

यहाँ तुला शब्द बराबर के अर्थवाला है। आशय कि सतसग एक ऐसी महान वस्तु है कि इसके बराबर कोई भी सुख नही है।

अब लंकिनी हनुमानजी से इस प्रकार बोली कि :—

प्रविसी नगर किजे सब काजा।
हृदय राखी कौसलपुर राजा ॥

हे हनुमानजी इस नगर में अर्थात लका पुरी में आप सर्वत्र प्रवेश कर सकते हैं यह मै आपको संकेत करती हूँ। कारण आपके बल बुद्धि और पराक्रम की मैं ने परीक्षा ले ली है।

आपको मैं सकेत करती हूँ कि आपने कोशलपुर के राजा को हृदय में धारण कर रखा है। आप सभी कार्य कर सकते हैं इसमें कोई सशय नही है।

लकिनी हनुमानजी को फिर विशेष मे यह कहती है कि प्रभु की आप पर पूर्ण कृपा है।

आप के लिये विष अमृत समान हैं, शत्रु भी आप से कांपकर मित्रता करेंगें, आपके आगे समुद्र भी गाय के पैर के समान है समुद्र लांघने में केवल इतनी ही देर लगती है जितनी देर गाय के खुर में लगे पानी को लांघने में होती है। अग्नि भी आप के लिये सीतलता प्रदान करेगी।

कथा वक्ता कागभुशुंडजी, गरुडजी से बोले कि हे गरुडजी जिस प्रकार सुमेरु पर्वत आप के लिये रजसमान है ऐसा हनुमानजी

श्री शंकरलाल छगनलाल चोकसी, कवाँट.

को रामचन्द्रजी ने सज्ञा दी है कि ऐसा प्रसंग वहाँ पर उपस्थित हुआ है।

इस प्रकार हनुमानजी के चरित्र की बात गोस्वामी जी ने कही। अब हनुमानजी भगवान का स्मरण करके—लंका नगरी में प्रवेश करते हैं।

वहां पहुंचते ही लंका नगर में वे सीताजी की शोध करने लगे। वहां कोई भी गणना

नही कर सकते थे जिसके बल की कोई सीमा नही ऐसे योद्धा वहां उन्हों ने देखें। आगे जाकर वे रावण जिस मदिर में निवास करता था वहां वे पहुचे। यहां गोस्वामीजी के कहने का भाव यह है कि रावण के मंदिर के आसपास अगणित और असीम बलशाली योद्धा वहां बसते थे।

वे अनेक प्रकार के छल कपट बनाकर माया रचनेवाले थे। हनुमानजी को राम कृपा होने से वे लेश मात्र भी उनको नही देख सके।

गोस्वामीजी का कहना है कि लंकिनी के समान ये सभी योद्धा हनुमानजी को देख लेते तो वहाँ उन्हे भयकर युद्ध करना पडता। और उन्हें वहा बहुत विलम्ब हो जाता। रावण के मंदिर की रचना बहुत विचित्र थी। इसकी शोभा इस भूतल पर अनुपम थी।

रावण कोई सामान्य योद्धा या राजा नहीं था। जो शोभा इन्द्र के यहां नही थी वह रचना और शोभा रावण के महल में थी।

गोस्वामीजी कहते हैं कि हनुमानजी रावण के महल में सात दिवस रहे। क्यों कि यहां कि सपूर्ण विगत उन्हें रामचन्द्रजी को कहनी थी। कुछ दूर एक सुन्दर मकान हनुमानजी ने देखा किन्तु उसमें भी उनको सीताजी के दर्शन नही हुए। परन्तु प्रभु की वहां सुन्दर रचना देखने को मिली जिसका वर्णन हनुमानजी गोस्वामीजी के आगे करते है।

"भवन एक पुनी दीख सुहावा, हरि मन्दिर तहँ भिन्न बनावा।
राम नाम अंकित गृह सोहा, बरनिन जाई देखी मन मोहा॥"

गोस्वामीजी कहते हैं कि रावण के महल में भी हनुमानजी को सीताजी देखने को नही मिली तब वे विचार में पड गये कि सीताजी कहाँ होंगें ।

जब उन्होंने सामने नजर करके देखा तो उन्हें एक सुन्दर भवन दिखाई दिया । उन्होंने विचार किया कि शायद इस में सीता जी हों । अथवा मुझे सीताजी का पता यहाँ से मिल सकेगा । ऐसा उन्हे विश्वास हुआ । वे उस तरफ वेग से चल पडे ।

विभीषण जी के भवन की रचना प्रभु निर्मित थी । उस महल में एक अलग मंदिर बना था । उसके द्वार पर "राम मंदिर" "रामालय" अंकित था । वास्तव में राम मदिर रामालय था ।

हनुमानजी इस विषय में इस प्रकार से कहते है । –

"रामायुदध अंकित गृह शोभा बरनी न जाई ।
नव तुलसिका बृंद तहँ देखी हरष कपि-राई ।"

स्वामीजी ने यह "रामायुध अकित गृह शब्द का यहां स्वरूप देकर कहा है कि राम चन्द्रजी, सीताजी, लक्ष्मणजी, भरतजी, शत्रुघ्न जी तथा हनुमानजी सहित सभी के गुण स्वभाव और चरित्र से अकित ऐसी श्री रामचन्द्रजी की भक्ति सारे आपास में गूज रही थी । इससे उस घर की परम शोभा देखकर कपि-राज हनुमानजी कहते हैं कि वहां की शोभा अवर्णनीय थी ।

नवतुलसी का वृद तहँ देखी हरष कपिराई। विभीषण के आपास के जड चेतन सभी पदार्थ राम राम की ध्वनि से रणकार दे रहे थे । अर्थात रामचन्द्रजी की भक्ति वहां सर्वत्र व्याप्त थी । इसे देखकर कपिराज हनुमानजी बहुत हर्षित हुए ।

"नवतुलसी का वृद तहा" स्वामीजी की इस चोपाई को स्वरूप देकर कहते है अर्थात नव नाम, नवीन तुलसी का नाम, भक्ति का वृंद नाम समूह वहां सर्वत्र हनुमानजी ने देखा । इसे देखकर कपिराज हनुमानजी को बहुत ही आनद हुआ । तुलसी प्रभुको प्रिय है । इससे इसका स्वरूप भक्ति है। वहां नव भक्ति का समूह उन्हें सभी स्थानों पर दिखाई दिया । इसे देख कर कपिराज हर्षित होकर वहां डोलने लगे । विभीषणजी की भक्ति देख कर विभीषण की प्रशसा करने लगे ।

गोस्वामीजी ने जो रामायुध अंकित गृह कहा है वह स्वरूप वाचक है । वह स्थान प्रभु श्री राम के वसवाट से अंकित हो उसका वर्णन कौन कर सकता है । विभीषण के आवास में कोई भी स्थान ऐसा खाली नहीं था जहां रामायुध न हो । आशय कि राम भक्ति बिना कोई स्थान खाली नही था । रामायुध शब्द रामजी का युद्ध नाम से जुडा है । इससे सबंधित होकर पूरा आवास शोभा-यमान हो रहा था । और उसमें नौ भक्ति का समूह दिखाई दे रहा था । कपिराज हनुमानजी ने यह अद्भुत भक्ति जो नवीनतम थी देखकर बहुत आनन्द हुआ ।

प्रभु श्रीराम ने अनन्य भक्ति की जो बात हनुमानजी से कही थी वह तादृप्य रूप में उन्हें वहां देखने को मिली । पहले तो वे बहुत ही विचार में पड गये कि राम राम की ध्वनि का तो अखंड रणकार आ रहा है स्वामीजी कहते हैं कि विभीषण के महल में हनुमान जी ने राम राम की ध्वनि सुनते हुए पूरी रात व्यतीत की । प्रातः काल चार बजे विभीषणजी जगे उसके पहले कपिराज विचार करते हैं कि —

"लंका निसीचर निकर निवासा ।
यहां कहा सज्जन कर वासा ॥"

श्री हनुमानजी अपने मनमें विचार करते हैं कि इसी निसीचरों की नगरी में सज्जन ने

श्री पद्मावती देवी के प्लवोत्सव के अवसर पर श्री सुन्दर राजस्वामी तथा उनकी देवियाँ

किस प्रकार निवास किया होगा ऐसा वे विचार करते हैं कि विभीषण जाग जाते है उडते ही वे राम नाम का स्मरण करते हैं। इसे देख कर कपिराज हृदय में बहुत ही हर्षित हुए और विभीषणजी को परम भक्त सज्जन जानकर हनुमानजी ने विचार किया कि मै इनसे परिचय करूँ जिससे कि मुझे सीताजी के निवास का पता चले। क्यों कि ये प्रभु के अनन्य सेवक हैं। ऐसा मैंने अनुभव करके देख लिया है।

इससे बात करने में कोई हानि नहीं हो सकती है। इससे कार्य सिद्धि हो सकती है ऐसा दृढ विश्वास उन्हे हुआ। तब हनुमान जी ने एक सुन्दर ब्राह्मण का वेश बनाकर सुन्दर वचन से इस प्रकार कहने लगे—

"राम राम कहवा करो जब लगि घट में प्रान।
कबहु के दीन दयाल के भनक पडेगी कान॥"

स्वामीजी कहते हैं कि हनुमानजी के विप्र रूप मे ये सुन्दर वचन सुनकर विभीषण का हृदय आनन्द उल्लास मे आ गया और मन में विचार करने लगे कि:—

"विप्र रूप में आकर मुझको किस ने यह सुनाया है।
जाकर देखुं वन्दन करके विप्र कहां से आये है॥"

विभीषणजी ने आगे बढकर विप्र को वन्दन किया और कुशलता पूछी और कहा कि हे विप्र प्रथम तो आप आपकी सत्य हकीकत कहिये। आप भगवान के दासों में अंगत सेवक है कि नही? मुझे हृदय में ऐसी प्रीतिपूर्वक विश्वास हो रहा है।

इससे आप मुझको यह कहे कि रामचन्द्र जी ने मुझे दीन अनुरागी और बडा भाग्यशाली बनाने के लिये आपको मेरे पास भेजा है ऐसा मुझे भास हो रहा है। तब हनुमान जी विभीषण के इन दोनों प्रश्नों का सुन्दर उत्तर दीन भाव से देते है स्वामीजी ने हनुमानजी के उन वचनों का स्वरूप यहा इस प्रकार से दिया है।

तब हनुमंत कहि सब राम कथा निज नाम।
सुनत जुगल तन पुलक मन मगन सुमीरी गुन ग्राम॥

हनुमानजी ने रामचन्द्रजी की सभी बात कही और कहा कि हे! विभीषण मै प्रभु का दीन सेवक हूँ। हनुमान मेरा नाम है। आप की प्रशंसा प्रभु ने मुझे लंका में आने के पूर्व ही कही थी कि वहां मेरा एक अनन्य सेवक है। उनकी रहन सहन देखकर आप स्वयं कह देगें कि मुझे सचराचर रूप में व्याप्त मेरे स्वामी भगवान है इस रूप में जानते है। मैने उन्हें पूर्व ही से अभय बना दिया है। वे मेरे सखा भी है इससे तुम्हें लंका में जाने के बाद पूर्ण रूप से विश्वास हो जावेगा।

स्वामीजी कहते है कि हनुमान जी की अवर्णनीय वाणी सुनकर विभीषण थोडी देर के लिये प्रभु के भाव में लीन हो गये उन्हें देखकर हनुमानजी भी भाव मग्न हो गये। स्वामीजी कहते है कि इन दोनों के हृदय मे प्रभु के गुणों का उल्लेख चित्रण हो गया। उसमें दोनों मग्न होकर प्रभु का स्मरण करने लगे। एक घडी भर तो वे इसी स्थिति में रहने के बाद विभीषणजी ने जो बात अपनी रहनी करनी के विषय में कही थी वह वे उसके बाद कहेंगें।

* सारतमग्रन्थ - श्रीवचनभूषण *

[जगद्गुरु रामानुजाचार्य यतीन्द्र स्वामी श्रीरामनारायणाचार्यजी महाराज, अयोध्या]

भगवत् शरणागतिपथपथिक श्रीवैष्णवजगत् मे भगवत्पाद लोकाचार्य स्वामीजी विशिष्टाद्वैत-सिद्धान्त के रहस्यग्रन्थ प्रणेताओ में मूर्धन्य आचार्य माने जाते है । ये भगवान रामानुजाचार्य से प्रतिष्ठापित ७४ पीठों की परम्परा के सुप्रसिद्ध आचार्य श्रीमत्कृष्णपादाचार्य के पुत्र थे । इनका प्रादुर्भाव श्रीमत्कलिवैरिदासाचार्य जी के अमोघ मंगलानुशासन से आज से ७०० वर्ष पूर्व पुण्य सलिला कावेरी के बीच श्रीरंगधाम में हुआ था। ये आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य व्रतधारी और सस्कृत द्रविड वेदान्त के उद्भट विद्वान् व भक्ति प्रपत्ति के मूर्तिमान स्वरूप थे । दिव्य सूरियो के द्वारा प्रादुर्भूत द्रविडवेदान्तो (सामवेदोपम सहस्रगीति आदि दिव्य प्रबन्धो) उनके व्याख्यान भगवद्विषय आदि ग्रन्थो मे सिद्धोपायनिष्ठ प्रपन्नाधिकारियो के लिये सर्वदा - सर्वत्र - अनुभव - चिन्तन और मनन करने योग्य परम प्राप्य लक्ष्मीपति भगवान के परमभोग्य वात्सल्य - सौलभ्य - सौशील्य - स्वामित्व - औदार्य - सौन्दर्य - माधुर्य व सौकुमार्य आदि गुणो का सरल सरस एवं रहस्यमय उल्लेख किया गया है । प्रस्तुत आचार्य ने द्रविड देश में अवतरित होने के कारण जन साधारण से विशिष्ट विद्वानो के उपकार हेतु उपर्युक्त द्रविड वेदान्तो और वेदवेदान्त के सारतत्वो का संकलनकर मणिप्रवाल (द्रविड संस्कृत मिश्रित) श्रीपतिप्पडि - मुमुक्षुप्पडि - तत्वत्रय - प्रपन्नपरित्राण - प्रमेयशेखर - अर्चिरादिमार्ग - अर्थ पंचक - संसार साम्राज्य और श्रीवचनभूषण आदि १८ ग्रन्थो की रचना की । इनमें निरन्तर मनन के अर्हं और स्वरूप तथा साधन का सर्वोत्कृष्टमार्गदर्शक ग्रन्थ 'श्रीवचनभूषण' माना जाता है । रहस्य सम्प्रदायग्रन्थों में इसे सारतम शास्त्र माना जाता है ।

असारमल्प सारञ्च सारं सारतरं त्यजेत् ।
भजेत् सारतम शास्त्रं रत्नाकर इवामृतम् ॥

असार, अल्पसार, सार और सारतर शास्त्रों की उपेक्षा कर सागर से सुधा प्राप्त करने की भाँति सारतम शास्त्र को ही वरीयता दी जानी चाहिये । इस आप्ततम श्लोक में उपवर्णित असार शास्त्र से– लौकिक ऐश्वर्य और स्वर्गादि अशाश्वतसुख साधन प्रतिपादक शास्त्र कहा गया कारण-ये सभी सुख अस्थिर दु.ख मिश्रित और दु खोदर्क है, अतएव असार है । इनसे इनके साधको को अन्त में कुछ भी नहीं मिलता ।

अल्पसार शास्त्र— जरामरणादि प्राकृतधर्मो से छुटकारा दिलाकर केवल आत्मानुभव बताने वाला शास्त्र अल्पसार कहा गया, क्योकि आत्म तत्व के नित्य होने पर भी उसके अणु होने के कारण उसमें आनन्द की मात्रा भी सीमित होगी अत. वह शास्त्र अल्पसार है ।

सारशास्त्र— कर्मयोग एव ज्ञानयोग सहकृत उत्तरोत्तर प्रवृद्ध भक्तियोग रूप स्वतन्त्रसाधन प्रतिपादक शास्त्र को सारशास्त्र कहा गया है । क्योकि इसका साधक भक्तियोगी इससे त्रिपाद्विभूति श्रीवैकुण्ठधाम में पहुँचकर अनवरत भगवदनुभव रूपसार प्राप्त करता है, अतएव इसे सारशास्त्र कहा जाता है ।

सारतरशास्त्र— 'कपिकिशोरन्याय' से (बन्दरी का बच्चा अपनी माता को अपनी रक्षा हेतु स्वयं पकड रखता है, वैसे ही) जो साधक प्रपन्न अपनी रक्षा या उद्धारहेतु स्वगत स्वीकार (अपने द्वारा की गयी शरणागति रूप साधना) के बल पर फल पाना चाहते है, ऐसी साधना बताने वाला शास्त्र सारतर कहा गया है । यद्यपि भक्तियोगी की अपेक्षा इस प्रपत्तियोगी को विशेषरूप में भगवदनुभूति होती है, किन्तु स्वतन्त्रतापूर्बक की गयी होने एवं शरण्यहृदयानुसारिणी न होने से फल पाने में बिलम्ब की सम्भावना के कारण इसको सारतर नाम से अभिहित किया गया है ।

सारतमशास्त्र— मार्जारकिशोर न्याय से (बिल्ली का बच्चा अपनी माता के विश्वास पर निर्भर निश्चेष्ट है कि वह उसकी रक्षा करेगी) वैसे ही सर्वरक्षक सर्वशेषी - सर्वस्वामी भगवान को रक्षकत्वेनवरणकर कि वे मुझे अपना चुके है, और मेरी रक्षा के लिये कृतसंकल्प है । इस प्रकार महाविश्वासपूर्वक की गयी परगत स्वीकार रूप शरणागतिनिष्ठा प्रतिपादक शास्त्र को सारतम शास्त्र कहा जाता है । यह साधना पारतन्त्र्यस्वरूप के अनुरूप तथा शरण्य भगवान के हृदयानुसारिणी (मनोनुकूल) होने से अचिरात नित्य भगवत्कैकर्यरूप फल सुनिश्चित ही प्रदान कराने वाली है, अतएव इसे सारतम शास्त्र कहा । इसके पहले कहे गये चारो शास्त्र स्वतन्त्रधिकारियो के लिये अनुष्ठेय तथा अभिमानवर्धक होने के कारण उपेक्षणीय हैं । सिद्धोपायनिष्ठ प्रपन्न श्रीवैष्णवो के लिये अन्य ग्रन्थो से सारतमशास्त्र (सद्ग्रन्थ) 'श्रीवचनभूषण' विशेषरूप से मनन और स्वाध्याय के योग्य है । इसके द्वारा तत्व-हित पुरुषार्थ का यथार्थज्ञान अनायास ही हो जाता है । शेषावतार श्रीमद्वरवरमुनीन्द्र स्वामीजी ने उपदेशरत्नमाला मे उपर्युक्त ग्रन्थ की महिमा का उल्लेख आकर्षकरूप से किया है—

को वा प्रबन्ध इहलोकगुरोः प्रबन्धैः
सादृश्यमेति सकलेष्वपि वाङ्मयेषु ।
तत्रापि किम् वचनभूषणतुल्यमन्यत्
सत्य ब्रवीमि तदिदं वचन न मिथ्या ॥

उभय देवेरियो सहित श्री रंगनाथस्वामीजी, नेल्लूर
फोटो : श्री एस वी के एस श्रीनिवासन्, तिरुपति
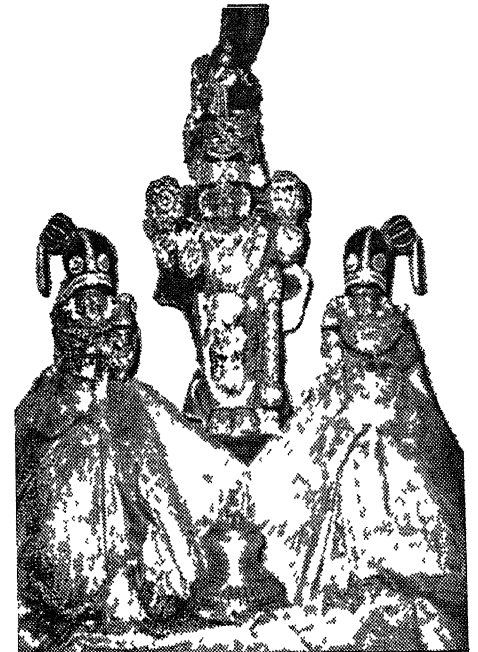
दान की महिमा | बालाजी की महिमा

श्री जगमोहन चतुर्वेदी, हैदराबाद.

जो जन हाथों से नही करता दान ।
उसे न मिलता जग में कही मान ॥
अनुभव हुआ मुझ को इस का महान ।
जब मैं गया था शादी में बनकर मेहमान ॥
जो गए थे शादी में लेकर निज-निज उपहार !
उन्हें ही मिला बदले में सत्कार तदनुसार ॥
न की मैंने योजना कभी भेट की ।
न मिल सकी मुझे रसना तक आदा भी ॥
दान में पूर्ण होती हैं वासनाएँ मनुज की ।
दान से मिलती है अमर कीर्ति जग की ॥
दान के बल पर शिवि-दधीच-हरिश्चन्द्र का दश जग में ।
चमकता रहेगा ध्रुव तारे की तरह जब तक सूर्यव्योम में ॥
दान के बलपर चल रहा है सृष्टि का व्यापार ।
कमाए क्या तुमने अपने कलपर जीवन के साधन अपार ॥
वायु-बल और सूरज का प्रकाश क्या नही जीवन के आधार ।
ईशा की उदारता का ही है यह व्यक्ति व्यवहार ॥
दान से ही कमाई अपार संपदारावण ने दस शीष शिव को देकर ।
विभीषण ने पाया उसे प्रभु चरणों में आत्म समर्पण कर ॥
देखती हैं दान की महिमा जराल में ।
दर्शन करो बालाजी के तिरुपति में ॥
हजारों यात्री जाते वहाँ लेकर वासनाएँ ।
भेट करते प्रभु चरणों में अनेको सपदाएँ ॥
श्रीनिवास प्रभु तो केवल माल को अपनाएँ ।
निज भक्तों की पूर्ण करते सभी कामनाएँ ॥
याद रख ईश-दर्शन व शादी में ।
कभी खाली हाथ न जाना ॥

बालाजी भगवान, करुणा निदान ।
दीन जनों पर दया करो सुदामा समान ॥
तुम विश्व-धर्म के सस्थापक ।
तुम दीन-जनों के उद्धारक ॥
तुम ज्ञान-दीप के प्रज्वालक ।
तुम जड-चेतन के प्रतिपालक ॥
तुम षड्रिपुओं के नाशक ।
तुम भक्त-जनों के सुखदायक ॥
तुम आर्त-जनों की पीडा हारक ।
तुम आर्थार्थी की इच्छा एक ॥
तुम जिज्ञासु-जनों के हृदय प्रकाशक ।
तुम सानी-जनों के उद्बोधक ॥
तुम रसिक-जनों के रसनायक ।
तुम दुष्ट-जनों के संहारक ॥
तुम हो अमित गुणों के भंडार ।
वर्णन न कर सकते शेष-शारदा हजार ॥
क्षुद्र-जन क्या कर सकते निर्धार ।
उस परम ज्योति का जो है विश्व का आधार ॥
भक्त-जन जो दर्शन अभिलाषी ।
जपत रहत निर्द्रि-दिन नाम हुलासी ॥
करहु कृतार्थ उन्हें अविनाशी ।
हरहु वेग उनकी अघराशी ॥
वे जन जिन के हाथ सदा खाली रहते ।
सच्चे हृदय से पत्र-पुष्प-फल प्रभु को भेट करते ॥
भगवान दौडकर उन्हें गले लगाते ।
अनायास ही उन्हें पूरन काम करते ॥

इस लोक मे श्रीमल्लोकाचार्य स्वामीजी द्वारा विरचित ग्रन्थो के समान अन्य कौन सा ग्रन्थ हो सकता है ? उनमे भी श्रीवचनभूषण की तुलना तो किसी से भी नहीं की जा सकती यह ध्रुव सत्य है । इस ग्रन्थ के इस नाम का कारण यह है—

प्राचा प्रपत्तिपदवीमयता गुरुणा
रोचिष्णुना वचनरत्नकदम्बकेन ।
ग्रन्थ कृतोऽयमखिलार्य जनस्य भूषा
तेनाभवद्वचनभूषणनाम तस्य ॥

शरणागतिमार्ग से चलकर उज्जीवन प्राप्त करने वाले दिव्यसूरियो (पूर्वचार्यो) के सहस्र-गीति आदि दिव्य प्रबन्धो का सगाढ़ अनुशीलन कर उनके सारतमतत्वार्थ प्रकाशक चमत्कारपूर्ण वचनरूपी भूषणो का सकलन करके आचार्य ने इस ग्रन्थ की रचना की और इसीलिये इसका सार्थक नाम श्रीवचनभूषण पडा । यह सबही श्रेष्ठपुरुषों के लिये भूषण की भाँति हृदय मे धारण करने योग्य तथा स्वरूप को प्रकाशित करने वाला हे ।

जानन्ति के वचनभूषणवारिराशे
र्धार्यसदा हृदि सतामभिधेयरत्नम् ।
के तत्प्रदर्शितपथेन च सञ्चरन्ति
यः कोऽपि सम्भवति चेद्विरलोऽपितज्ज्ञः ॥

श्रीवचनभूषणरूप दिव्य ग्रन्थ के अत्यन्त गम्भीर तत्वार्थ जो ससार के जनो के हृदय में सदा रत्नवत्धार्य तथा प्रवचन के योग्य है, उन्हे आज जानने वाले कौन हैं ? और जानकर भी उन मार्गो पर चलनेवाले कौन है ? यदि कोई चलने वाला होगा वह विरला ही होगा ।

उग्राद्भवाब्धिकुहराद्द्रुतमुत्तितीर्षा
जायेत वो यदि जनाः सदुपाय एष ।
आलोच्यता वचनभूषणमात्मनीनं
निष्ठीयता च नियमेन तदुक्तिमार्गो ॥

सज्जनो ! यदि आप इस भयंकर अगाध संसार समुद्र से पार जाने की अभिलाषा रखते है तो उसका सुगम उपाय यह है, 'श्रीवचनभूषण' का निरन्तर अपने मन में चिन्तन करें। और उसके बताये मार्ग में अत्यन्त श्रद्धा रखें व वैसे ही चलें ।

इस ग्रन्थ की रचना के सम्बन्ध में एक अनुश्रुति प्रसिद्ध है—श्रीकांचीपुरी के समीप मणल-

(शेष पृष्ठ २७ पर)

वह फूल जिसकी महक हमेशा महकती रहेगी

इस जगत में जीवन और मृत्यु दोनों साथ साथ चलते हैं। यह जगत एक उपवन है, जिसमें तरह तरह के रंग रंग के पुष्प खिलते हैं। कुछ पुष्प अपनी सुगन्ध और सुरभि हमेशा के लिए छोड जाते हैं। इन पुष्पों में एक पुष्प श्रीअनंत साय नाम अय्यगार जी भी थे। आज वह हमारे बीच नहीं हैं पर उनके विचार उनके कर्म अभी भी जीवित हैं।

श्री अय्यंगार जी का जन्म ४ फरवरी १८९१ में वैष्णव परिवार में हुआ था। आप सस्कृत के महान विद्वान थे। जब आप सिर्फ पाँच वर्ष के थे तब शिक्षा प्राप्त करने के लिए तिरुपति भेज दिए गए। तिरुपति जैसे पवित्र वातावरण में आप की शिक्षा प्रारम्भ हुई। कहते हैं वंशानुगत और वातावरण का प्रभाव गहरा पडता है। इस बात का प्रमाण श्री अनंत सायनाम अय्यंगार जी थे। छोटी सी ही उम्र में पवित्र स्थान का प्रभाव आप के मन, मस्तिष्क पर गहरा पडा। आप कठिन परिश्रम करने वाले विद्यार्थी थे। कक्षा में सदा प्रथम आते थे। छोटी सी उम्र में आपके पिता की मृत्यु हो गई। दस वर्ष की आयु में, जब कि उनकी उम्र खेलन कूदने की थी, घरेलू समस्याओं और कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। पर यह सच है कि सोना तप कर ही निखरता है। समस्याओ और कठिनाईयों के होते हुए भी अपना अध्ययन जारी रक्खा। उन्होने अपना केरियर अध्यापन कार्य से आरम्भ किया। शीघ्र ही आप वकील वन गए। उन्होनें अपनी वकालत प्रसिद्ध वकील श्री दोरा स्वामी अय्यंगार जी के संरक्षणा में शुरू की। श्री दोरा स्वामी जी के प्रोत्साहन से ही उनका राजनैतिक जीवन शुरू हुआ। और चित्तूर म्यूनिसिपालटी के चेयरमेन नियुक्त हो गए। सफलता उनके कदम चूमती १९३३ में पार्लिमेंट के सदस्य चुने गए। अपनी दूरदर्शिता, योग्यता और कौशल के कारण विभिन्न कमेटियों के ऊपर अध्यक्ष चुने गए। पर उन्होंने सदा जीवन उच्च विचार की कहावतय को चिरतार्थ किया। उन्होने अपनी जिन्दगी में सादगी और सरलता को महत्त्व दिया।

लोकसभा के स्पीकर की हैसियत से उन्होने बहुत ही योग्यता और कुशलता से उस क्षेत्र में कार्य किया। इस पद पर आठ साल तक रहे। १९७१ में आप विहार के राज्यपाल नियुक्त हुए। सात साल तक विहार राज्य का शासन कुशलता से चलाया। यूरोप के विभिन्न देशों रूस आदि देशों की यात्रा की।

आप का स्वभाव बहुत सरल निस्वार्थी, सादा था। मुथरा विश्वविद्यालय ने उनकी सस्कृत योग्यता को देख कर डाक्टरेट की उपाधी से विभूषित किया। आप तिरुपति के केन्द्रीय विद्यापीठ के चेयरमेन नियुक्त किए गए थे। समाज सेवक के रूप में आप के कार्य सराहनीय हैं। कोढ, पीडित, दलित वर्ग के लिए आप के दिल में दया, उदारता थी। उनकी दशा सुधारने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहे। आप प्यार देते थे और लोग उसके बदले उनको आदर, प्यार देते थे। आप का स्वर्गवास १९ मार्च १९७८ में हुआ। आज आप हमारे बीच नहीं हैं पर उन के द्वारा किए गए कर्म हमेशा जिन्दा रहेंगें। उसकी महक हमेशा दिलो दिमाग में छाई रहेगी। खाली हाथ आए थे खाली हाथ चले गए पर छोड बहुत कुछ गए। अपनी मधुर याद। *
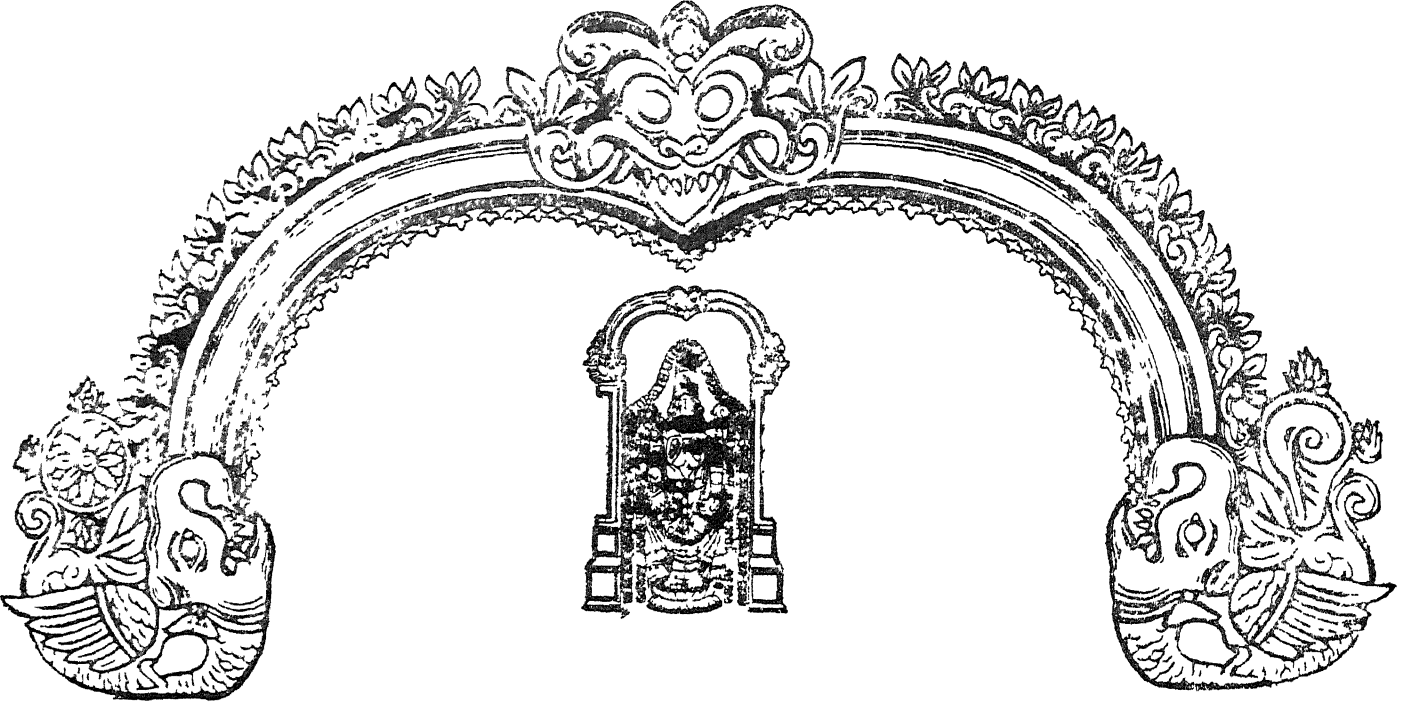
तिरुमल – यात्रियों को सूचनाएँ

भगवान बालाजी के दर्शन

ति. ति देवस्थान को यह विदित हुआ कि कुछ धोखेबाज व्यक्ति यात्रियों से पैसे लेकर भगवान के दर्शन शीघ्र ही करवाने का वादा कर रहे हैं

देवस्थान यात्रियों को विदित कराना चाहता है कि जहाँ तक संभव हो एक संयत एवं क्रम पद्धति में भगवान बालाजी के दर्शन कराने का भरसक प्रयत्न कर रहा है। प्रतिदिन दस हजार से अधिक यात्री भगवान बालाजी का दर्शन करने आते हैं और दर्शन की सुविधा केलिए दिन में १४ घंटे का समय मदिर का द्वार खोल दिया जाता है जिस में ११ घटे सर्वदर्शन केलिए नियत है। यदि यात्रियों की भीड अधिक हो तो क्लोजड षेड्स से और अधिक न हो तो सुरक्षित महाद्वार से दर्शन का प्रबध किया जा रहा है।

वे यात्री जो समय के अभाव, अस्वस्थता अथवा अन्य किसी कारणवश क्यू में खडे नही सकते वे प्रति व्यक्ति रु. २५/- मूल्य का टिकट खरीद कर मंदिर के अन्दर ही ध्वजस्तंभ के पास से क्यू में शामिल हो सकते हैं जिस से कि उन को ५ मिनट के अन्दर ही भगवान के दर्शन प्राप्त हो सके।

यात्रियों से ति. ति. देवस्थान का निवेदन है कि वे बाहरी व्यक्तियों की सहायता से दर्शन प्राप्त करने का प्रयत्न न करे। शीघ्र दर्शन की सुविधा केलिए ति. ति. देवस्थान के द्वारा जो उत्तम प्रबंध किये गये हैं, कोई कभी व्यक्ति भगवान का दर्शन उससे शीघ्रतर रवाने में असमर्थ है। अतः कृपया यात्रीगण ऐसे धोखेबाजों की झूठे वायदों से हमेशा सतर्क रहें।

भगवान के दर्शन प्राप्त करने में जो विलब और प्रतीक्षा करने से जिस सहनशीलता का अभ्यास होता है, वह तो कलियुगवरद श्री वेंकटेश्वर के दर्शन प्राप्त करने केलिए अपेक्षित ही है और वह एक प्रकार की तपः साधना भी है जिस के द्वारा भगवान का संपूर्ण अनुग्रह प्राप्त होता है।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति ति. देवस्थान. तिरुपति.

भक्तकवि कबीर और ज्ञानेश्वर

गुरुदेव डा० रा. द रानडे ने हिन्दी सन्त कवि कबीर को ज्ञानेश्वर - तुकाराम की पक्ति में बैठाया है। आत्मानुभव के उच्च पद के वचन उनके ग्रथो मे पाए जाते है। ज्ञानेश्वर और कबीर एक सिकके के दो पहलू है। तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई इत्यादि भी हिन्दी के श्रेष्ठ कवि हैं।

"सूर सूर तुलसी शशी, उडगम
केशवदास"

ऐसी तुलना करना सन्तों के सम्बन्ध मे अयोग्य होगी।

"को बड-छोट कहत अपराधू"

ज्ञानेश्वर, तुकाराम और कबीर - इन के आत्मानुभव इतने श्रेष्ठ हैं कि इन्हें समझने के लिए तत्त्व ज्ञान और धर्म का तुलनात्मक अभ्यास दीर्घकाल तक करना चाहिए। सब तत्त्वज्ञान का कलश साक्षात्कार है। ज्ञानेश्वर, तुकाराम, नामदेव, एकनाथ - सूरदास इत्यादि मराठी सन्तो ने इस विषय पर अपने विचार प्रकट किए है।

ज्ञानेश्वर अ० १८ ओवी १९८०–१९८१ मे साक्षात्कार का वर्णन इस प्रकार किया गया है।

"एवं तो बोले तें स्तवन। तो दोने तें
दर्सन।
अद्वया मन गमन। तो चाले ते चि॥
तो करी तेतुली पूजा। तो कल्पी तो
जयु माझा॥
तो आसे तोचि कपि ध्वजा। समाधि
माझी॥"

अर्थात्—

भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते है :—

साक्षात् प्राप्त पुरुष जो भी बात करता है वह मेरा स्तवन है। उसका देखना ही तत्त्व दर्शन है। ऐसा महा पुरुष जब चलता है तो वही अद्वय रूप मेरा गमन है। वह जो भी करता है मेरी पूजा है। उसकी कल्पना ही मेरा जप है और अस्तित्व भाव ही मेरी समाधि अवस्था है।

ह बहू ऐसा ही वर्णन कबीर के इस पद में दिखाई देता है :

"जहँ जहँ डोलौंसो परिकरमा।
जोकछुकरौं सो सेवा॥
जब सो वौं तब करौं दंडवत।
कहौं सो नाम॥

जुनौ सो सुविरारवावं। पियों सो पूजा॥
खुले नैन पहिच्त्तनौ हँति हँति।
सुंदा रूप निहारी।
उठत बैठत कब हुं न छूटै। ऐसी तारी
लागी॥
कहे कबी यह उन्मनिरहनी। सोपरकर
गरी गाई॥"

श्री जगमोहन चतुर्वेदी.
हैदराबाद

अर्थात्—

मै चलता हूं वही प्रदक्षिणा है। मै जो कुछ करता हूं वही सेवा है। मै लेता हूं वह दंडवत है। जो बोलता हूं वही नामोच्चार है सुनता हूं वह स्मरण है। खाता - पीता हूँ वह पूज्य है। खुले नयनो से परमेश्वर को देख कर मे उन्हें पहचान लेता हूं और हँसते - हँसते आनन्द से भगवान के सुन्दर रूप का दर्शन करता हूं। ईश्वर के प्रति मेरा ऐसा अखंड ध्यान लगा हुआ है कि उठते - बैठते यह कभी नहीं भंग होता। कबीरदास कहते है कि मै ने अपनी इस उन्मनि अवस्था को गाकर प्रकट किया है।

श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचित शिव मानस पूजा में भी यही भाव प्रकट किया गया है:

"आत्मा त्व, गिरिजा मतिः
सहचरा प्राणा, शरीरं गृहं।
पूजा ते विषर्याय भोग रचना
निद्रा समाधि स्थितिः
सञ्चार पद्योः प्रदाक्षणविधिः
स्तोत्राणि सर्वा गिरो।
यद्यत्कर्म करोमि तत्तरीवसं
शंभो तवाराधनम्॥"

अर्थात्—

हे शंभो! मेरा आत्मा तुम हो, बुद्धि पार्वती जी है, प्राण आपके गज हैं। शरीर आपका मन्दिर है। संपूर्ण विषय भोग की रचना आपकी पूजा है। निद्रा समाधि है, मेरा चलना - फिरना आपकी परिक्रमा है तथा संपूर्ण शब्द आपके स्तोत्र है। इस प्रकार मे जो भी कर्म करता हूं वह सब आपकी आराधना ही है?

प्रभु मिलन के लिए छटपटाहट

परमेश्वर से भेट न होने के कारण साधक को छटपटाहट होती है। इसके उद्गार ज्ञानेश्वर और कबीर की रचना में बहुत थोडे पाए जाते हैं। इस का मतलब यह है कि इन दोनों को इस मंजिल पर देर तक न रुकना पडा।

विरहिणी के रूपक में अपनी छटपटाहट का वर्णन ज्ञानेश्वर ने अपने एक अभंग में इस प्रकार किया है :

"चंदनाची चोली माझे सर्व अंग पोनी।
कान्हो वन माळी वेगे भेटवाना का॥

श्री नटराज स्वामी, सुरिटिपल्लि
फोटो श्रीएस.वी के एस श्रीनिवासन, तिरुपति

हिन जैशी रजनी मासी जाली गे माये ।
अवस्था लावुनी गेला अजुनी कां न थे ॥"

अर्थात् —

शीतल चदन की चोली मेरे सर्वांग को तपा रही । अरे! कोई तो भी वनमाली कान्हा से मेरी भटें करा दो । रात तो केवल दिन के समान बन गई है । मुझे विरह दशा में डालने बाला कान्हा अभी क्यो नहीं आ रहा है ?

इसी प्रकार का वर्णन कबीरने अपने एक पद में किया है

"नैना तरसै दरसन को ।
विरह सतावै हाय अव, जिव तडपे मेरा ॥
जो अव के प्रीतम मिले, करूँ निमिज न
न्यारा ।"

अर्थात् —

हे प्रभो! आपके दर्शन के लिए मेरी आँखे तरस रही है । हाय! विरह मुझे सता रहा है । मेरा प्राण तडप रहा है । यदि अब प्रियतम परमेश्वर से भेट हुई तो उन्हें क्षण भर के लिए भी दूर न करूँगा ।

परमार्थ पद के अन्तिम सोपान पर पहुँच ने के बाद साक्षात्कार प्राप्त होता है अर्थात् परमेश्वर का अपरोक्ष अनुभव प्राप्त होता है । ऐसे अनुभवो के तेजस्वी, श्रेष्ठ प्रभावी वर्णन ज्ञानेश्वर के समान कबीर के पदो मे अनेक स्थान पर मिलते है जिन्हें पढने से ऐसा मालूम होता है मानो आत्मानुभव की बाढ ही आगई है?

पातजल योग सूत्र में पाँचो ज्ञानेन्द्रियो द्वारा होने वाले श्रवण, स्पर्श, दर्शन, रुचि और गध के प्रातिभ अनुभव का वर्णन है —

"ततः प्रातिभ-श्रावण वेदनादर्शास्वाद-
वार्ता जायँते" । (पा-यो सू-३-३६)

ज्ञानेश्वर, कबीर आदि सन्तोने अपने प्रातिभ अनुभवो का वर्णन किया है:

ज्योति :—

ज्ञानेश्वर ने ऐसे मोती का दर्शन किया जिस का तेज आठो दिशाओं में झलकता है

"सुढाक ढाकाचे मोती ।
अष्टे अंगीं लगे ज्योती ॥"

ऐसा मालूम पडता है कि श्रेष्ठ प्रतीक के मोती की काति ही अष्टांगो की ज्योति स्वरूप बन चुकी है ।

ऐसे ही मोती के दर्शन का अनुभव कबीर ने भी वर्णन किया है·

बिना सीप जहँ मोती उपजै

ज्ञानदेवने भगवान के कृष्ण वर्ण स्वरूप का बड़ा सुन्दर वर्णन किया है

"वरवें रूप काळें अयोलिक
रावमा देली वह अगाध का के ।
सुखाचा निधि सुख सागर जोडला
मज पाचारी गे काळा दादुला माण ।
काळे देखिले रूपडे साचें ॥"

कृष्ण-भगवान का काला रूप अगाध एव अमोलिक है । मझे रुक्मिणी-पति विट्ठल के दर्शन से सुख निधि एव सुख सागर ही प्राप्त आ है यह काला स्वामी मुझे बुला रहा है । उसके काले रूप का दर्शन मुझे हुआ है ।

भौतिकशास्त्र के मतानुसार श्याम वर्ण तेज की परा सीमा है । इस शास्त्र के अनुसार सातो वर्ण श्वेत वर्ण से निकलते है, परन्तु साक्षात्कार शास्त्र के अनुभवानुसार अनेक रग काले रंग से निकलते हैं । कृष्ण वर्ण का ऐसा महत्व ज्ञानेश्वर, कबीर आदि सन्तो ने स्वानुभव से मालूम किया ।

कबीर को परम ज्योति के दर्शन हुए जिसका वर्णन उन्हो ने इस प्रकार किया है

"गगन की गुफा तहाँ शैव का चांदना
उदय औ अँस्त का नाव नाहीं ।
दिवस औ रैन तहाँ नेक नहि पाईए,
प्रेम औ परकाम के सिन्धु माही ॥"

मैंने सहस्रदल कमल [गगन गुफा] मे परम ज्योति का दर्शन किया । इस ज्योति का न आदि है न अन्त । यहाँ उदय-अस्त, दिन-रात का नाम नही ।

यह निःस्वार्थ प्रेम और परम प्रकाश का सिद्ध है—

अनाहत नाद :—

कबीर ने अनाहत नाद का पर्याप्त वर्णन किया है और साधक के जीवन पर इस से होने वाले महत्त्व शील परिणाम का भी वर्णन किया है । बे कहते है:

(1) "सुत्र मडल में घर किया, वाजे
शब्द रसाल ।
रोम-रोम दीपक मया, प्रकटे
दीन दयाल ॥"

अर्थात्—

मैंने शून्य मंडल में अपना घर बनाया तात्पर्य यह कि जब मैंने ब्रह्म-रूप का ध्यान धारण किया तो मुझे अत्यन्त मधुर अनाहत नाद सुनाई देने लगा । मेरे रोम-रोम में दीपक जैसा प्रकाश होने लगा । इस रीति से दीनदयाल परमेश्वर प्रकट हुए और इस रूप में उन्होंने मुझे दर्शन दिया ।

(II) सब वाजे हिरहे बजे । प्रेम वरवा
वज तार ।

मंदिर ढूंढत को फिरे। मिले
बजावन हार ॥"

अर्थात् —

प्रेम उत्पन्न होने के कारण पखावज, ततु कछ आदि सब बाजे मेरे हृदय में बजने लगे। इन वाद्यों को बजाने वाले परमेश्वर से भी मेरी भेट हुई। अब भगवान को मंदिर में जा कर ढूंढने की आवश्यकता नहीं।

प्रेम की टंकार में वह शक्ति है कि अनाहत नाद सुनाई देने लगता है।

अनाहत नाद के संबन्ध में श्रीमच्छंकराचार्य कहते हैः

"नादानुसंधान नमोऽस्तु तुभ्यं।
त्वां साधन तत्त्वपदस्य मन्ये ॥
"भवत्प्रसादात् पवनेन साक।
विलीयते विष्णुपदे मनो मे ॥

अर्थात् —

हे अनाहत नाद! मै तुम्हें नमस्कार करता हूँ। ब्रह्मात्वभाव का अनुभव प्राप्त करने का तुम्ही एक साधन हो—ऐसा मैं समझता हूँ, तुम्हारे ही प्रसाद से मेरा मन प्राण सहित विष्णु पद में लीन होता है।

स्पर्श—

"कवीरा दोना एक अंग, महिमा कही
न जाय।
तेज पुंज परसा धनी, नैना रहा समाय ॥"

कबीर कहते हैं:

मुझे परमेश्वर के एक अंग, अल्प अंश का साक्षात्कार प्राप्त हुआ, परन्तु इसकी भी महिमा इतनी अधिक है कि उसके वर्णन करने मे मै असमर्थ हूँ। मैंने अपने तेज पुंज स्वामी का स्पर्श किया। मेरे नेत्रों में उनका रूप समा गया है। मै निरन्तर उनका दर्शन करता रहता हूँ।

अमृत स्वाद :—

कबीर ने अमृत स्वाद का वर्णन इस प्रकार किया हैः

"रस गगन गुफा में अजर झरै ॥ टे ॥
विन कजा झनकार उठै जहँ।
समुझि परै जब ध्यान धरै ॥
काल कराल निकट नहीं आवै।
काम क्रोध मद लोभ जरै ॥
जुगन जुगन की तृषाती कुझाती।
करम भरम अध व्यधि टरै ॥
कहै कबीर सुनो साउ साधो।
अमर होय कबहुन मरै ॥

अर्थात् —

सहस्रदल कमल [गगन-गुफा] में बिना बाजे के झकार उठती है तथा उसी स्थान पर अमृत रस का झरना ब्रह्मरंध्र से निरन्तर बहने लगता है। यह सब अनुभव ध्यान करने से समझ में आता है। इस अमृत रस के सेवन करने से कराल काल निकट नहीं आता। काम, क्रोध, मद, लोभ — ये शत्रु जल कर भस्म हो जाते हैं। युग-युग से लगी हुई दर्शन की तृषा शान्त हो जाती है। कर्म, भ्रम, पाप और व्याधि सब दूर हो जाते हैं। इस अमियरस पीने से मनुष्य अमर हो जाता है।

पर यह अमिय रस अत्यंत मँहगा हैः

"हरि रस मँहगा सो पियै, धड पर
सीस न होय"

अर्थात् —

इस रस को प्राप्त करने के लिए प्राणो को अर्पण करना पड़ता है।

समर्थ का कहना है:

"देवाच्या सख्यत्त्वा सासी।
पदस्या नित्र लगासी तुटी ॥"
सर्वस्व अर्थावें रोवटी।
प्राण तोहि बेंचावा ॥

अर्थात् —

भगवान का सखा बनने के लिए अपने प्राण प्यारो को त्यागना पड़ता है, सर्वस्व अर्पण करना पडता है और अन्त में प्राण को भी देना पड़ता है।

नरसी मेहता का भी यही कहना हैः

"शीम सारे हरिने वरिये"

अर्थात् —

इसी को वरण करने के लिए प्राण की बाजी लगानी पड़ती है।

गुजराती सन्त प्रीतम ने अपने एक पद—

"हरीनो मार्ग छे शूरानो" ॥
में इसी भाव को व्यक्त किया है

प्रेम का पंथ पावक की ज्वाला है, मनुष्य उसे देख कर पीछे भागते हैं, परन्तु जो इस ज्वाला में कूद पडते है वे परमानन्द का भोग करते हैं तथा देखने वाले झुलस जाते हैं। भगवान के प्रेम के नशे में मस्त भक्त ही इस प्रेम का आनन्द समझ सकता है। वह ही प्रीतम अपने स्वामी की लीला को निशिदिन देख सकता है।

दूसरे एक पद में अमृत रस की मदिरा से तुलना करके उस मदिरा को तैयार करने की विधि, उसके सेवन से सात्त्विक उन्माद की दशा का कबीर ने अत्यन्त मनो बेधक वर्णन किया है। यथाः (शेष पृष्ठ २४ पर)

राजमन्नार गुडि स्थित राजगोपाल स्वामी मदिर के सामने का दृश्य
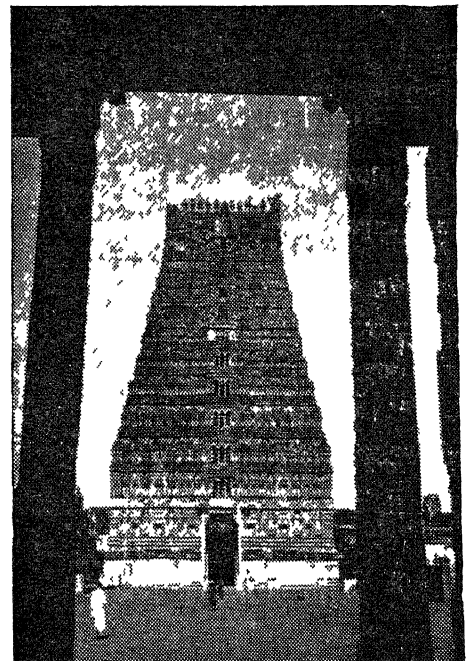
प्रसन्न वेकटदास जी का कथन है—

"श्रवणदलि नारदगे गत कन्पद्यपरोक्ष
सवियदे साम्राज्य लेक्किद्ददे प्रियव्रत ।।
अवनिपरु वनपोक्कु हरियनाश्रयिसिदरु
विसेलरलि विष्णुशतनगे मोक्ष ।।"

(श्रवण के प्रभाव से नारद को सर्वदा भगवद्दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ। प्रियव्रत आदि राजाओ ने अपने राज्यो को ही छोडकर वनवास करते भगवान का आश्रय पाया। श्रवण भक्ति के फलस्वरूप विष्णु रात को एक ही सप्ताह में मुक्ति प्राप्त हो सकी।

मीराबाई का उद्गार है—

"रामनाम रस पीजे मनुआ रामनाम रस पीजे।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित हरिचर्चा सुन लिजे ।।"

कबीरदास का उपदेश भी इसी प्रकार है—

"रामनाम सिमिरि रामनाम सिमरि, रामसिमरि भाई। रामनाम सिमरन बिनु बूडते अधिकाई। अजामल गज गनिका पतितकरम कीने, तेऊ उतेरी परि परे रामनाम लीने ।।"

"सूकर कूकर जोनि भ्रमे तऊलाज न आई,
राम नाम छांडि अति काहे बिसुखाई ।।"

श्री वरदराजस्वामी की वाणी में नामामृत के श्रवण, स्मरण तथा कीर्तन से मिलनेवाले सुख का वर्णन देखिए—

"पावनमाडुवुदु नामामृत रस, पावन माडुवुदु सक्करे बेरेसिदचोक्क पानकवंते। मुक्कु मणि-सुतिदे रक्कु सारिय ध्यान, कदलि, खर्जुर, द्राक्षि इदकू इम्मिगिलागि मुद कोडवुदुजिह्वेगोदगिद तक्षण ।।"

(भगवान के नाम-रूपी अमृत के पान से वही सुख प्राप्त होता है। जो शक्कर से बनाये हुए शरबत पीने से होता है। भगवन्नाम-स्मरण से राक्षसो के विनाशक का ध्यान साध्य होता है। भगवन्नाम-कीर्तन से जीभ को वही स्वाद मिलता है जो केले, खर्जूर, द्राक्षि आदि के आस्वादन से मिलनेवाली रुचि इससे कम ही मानी जा सकती है।)

सत सूरदास के निम्नांकित पद भी भगवन्नाम को मधुर रस बतलाते है। भगवन्नाम के श्रवण, स्मरण तथा कीर्तन से होनेवाले लाभ सूरदास के अनुसार निम्न प्रकार है—

अ) जा बन राम-नाम अम्रित रस स्रवन पात्र भरि लीजै।

आ) रास रस लीला गाइ सुनाऊँ।

यह जस कहै, सुनै मुख श्रवननि तिहि चरननि सिर नाऊ।

कहा कहो वक्ता श्रोता फल इक रसना क्यो गाऊं।

धनी वक्ता, तेई धनि श्रोता, स्याम निकट है ताकें।

सूर धनि तिहि के पितु-माता भाव भगति जाकें

भगवदनुग्रह श्रवण, स्मरण कीर्तन आदि से होनेवाले लाभो में सर्वश्रेष्ठ है।

"सोई रसना जो हरि-गुन गावै—श्रवननि कीजु यहे अधिकाई।

सुनि हरिकथा सुधा-रस पावे ।। जो हरि जू सो प्रीति बढावे।

कीर्तन— कबीरदास भगवन्नाम कीर्तन की महिमा का निम्नप्रकार वर्णन करते है।

"अगिनि न दहै पवनु नहीं मगने तसकरु नेरि न आवे।
राम नाम धनु करि सत्रउनी सो धनु कहतही न जावै ।।
हमारा धनु माधऊ गोविंदु धरणीधरू इहसार धनु लहिओ ।।
जो सुखु प्रभु गोबिंद की सेवा सो सुखु राज न लहीओ।
इसु धन करणि सिव सनकादिक खोजत भए उदासी।
मति मुकुद जिह्वा नाराइनु परे न जम की फांसी ।।"

प्रसन्न वेंकटदासजी का अभिप्राय है कि कीर्तन भवरोग के लिए भेषज है। भवरूपी सागर को पार करने में सहायक नाव है, भव-रूपी कानन केलिए आग है, भगवद्भक्तो के लिए आनन्द दायक अमृत-सदृश पानीय है।

"भवरोग भेषज हरिनाम कीर्तने, भववारिधि पोत भवाटवाग्नि।
भवविधि कीर्तीत पद, प्रसन्नवेंकट भवनन दासरू सवि दुंबामृतवु ।।

सूरदास के अनुसार कीर्तन, जप, तप, तीर्थ-स्नान और चारो पुरुषार्थो से अधिक उपयोगी है, क्योंकि कीर्तन से नन्द-नन्दन ही उर में बसने लगते है।

तुलसीदास जी का दृढनिर्णय है—

"जो नहीं करै रामगुनगान जीह सो दादुर जीह समान ।।"

रामनाम मणिदीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी बाहिर भीतरहु जो चाहसी अजियार ।।
रटत रटन रसना लटी, तृषा सूखिगे अग, तुलसी चातक प्रेम को नित नूतन शुचि रग ।। बरसि परुख पाहन पयद पंख करीटुक टूक, तुलसी परी न चाहिए चतुर चातकहीं चूक ।।

श्रीपादरामस्वामी का कथन है कि कृतयुग में ध्यान त्रेतायुग में यज्ञ, द्वापर में असुर-नाशक

क्ति

डा० एस. वेणुगोपालाचार्य,
माण्ड्या

भगवान की पूजा भगवत् प्राप्ति के साधन थे तो कलियुग में केशवनाम कीर्तन से सभी फल प्राप्त होंगे । उनके ही वचन सुने ।

" ध्यानवु कृतयुगदल्लि कलियुगादि गानदि ।
केशवनेंदरे कैगुडुवनु रंगविठल ।। "

हिन्दी तथा कन्नड दोनो में भगवन्नाम-स्मरण की भूरि प्रशसा है । भगवद् भक्ति के प्रवर्धन में श्रवण तथा कीर्तन के ही समान स्मरण भी नितान्त सहकारी है ।

स्मरण भक्ति

श्री विजयदास की उक्ति है—

" हरिय नेनेसिद दिवस शुभमगलं
हरिय नेनेसद दिवस अवमगल ।। "

(हरि के स्मरण में व्यतीत हुए दिन ही शुभदिन और हरि के विस्मरण से बिताये दिन बुरे दिन है ।)

पुरदरदास का विचार है कि प्रह्लाद को जब उसका पिता हिरण्यकशिपु सताने लगा तो प्रह्लाद की रक्षा नरसिहस्वामी के नामस्मरण से ही सभव हुई । वासुदेव के नामस्मरण से ही वनगमन करनेवाले बालक ध्रुव का उद्धार हुआ। पुरदर विटठल के नामस्मरण के समान मै किसी सपत्ति को नही जानता ।

" प्रह्लादन पिता बाधिसुतिरुवाग बल्लिद नरसिह
नामवे कायितो ।
हसुले आध्रुवराम अडविगे पोपग वासुदेवनेबं
नामवे कायितो ।
निन्न नाम के सरियादुदु काणेनो घनमहिम
सिरिपुरंदरविठल ।। "

श्री विजयविठ्ठलदास का उद्गार है—

" हरिनाम नबिदरे केडकिल्ल केडिल्ल हरिनाम
नेनेदवर कुलकोटि उद्धार ।
हरिनाम नेनेदरे सर्वरोगगलु उरिछि पोगुवुवु
नीकेलो एले जीव ।।

हरिनाम निजस्वामि विजय विठ्ठलनाधि परिशुद्ध-
गागि नेने नित्यं मनदल्लि " ।।

हरिनाम स्मरण करनेवालो को कोई बाधा नहीं सता सकती । उनके ही नहीं, किन्तु उनकी करोड़ो पीढियो का उद्धार उनके भगवन्नाम स्मरण के फल के रूप में अवश्य होगा । हे मानव सुनो हरिनाम स्मरण से समस्त रोगो का निवारण होगा । परिशुद्ध होकर मनमें हमेशा हरिस्मरण करते रहो । वन्दन—प्रसन्नवेंकटदास जी वन्दन की महत्ता निम्न प्रकार गाते हैं ।

" वदिसिदवरे वंद्यरु पूजितरु मुकुद गोविद श्री
हरियन्नु ।
एंदेंदु कुंददानन्द वदिसुव इदिरेयरस भवबंध
मोचकन ।
हत्तश्वमेधाबमृतस्नान माडलु मर्त्यगे पुनर्जन्म
गलिल्ला ।
सत्यनामधवगे निष्कामदि नमिसि मत्तोम्मे
नमिसे मुक्तिगे साधन ।। "

(जो श्रीहरि को भवबन्ध मोचक इन्दिरापति को, मुकुन्द गोविन्द आदि नामो से पुकारते हुए वन्दन करते है, वे ही पूर्ण आनन्द भोगने तथा सबसे वन्दित होने योग्य बन जाते है । जो दस अश्वमेधयाग करते है उनको पुनर्जन्म प्राप्त नहीं होता । उसी प्रकार, जो नि स्वार्थभाव से सत्यभामा के स्वामी को पुनः पुनः नमस्कार करते है. उसे मुक्ति अवश्य मिल जाती है यानी वन्दन मुक्ति का साधन है ।)

सूरदासजी से वन्दन—भक्ति की महिमा इस प्रकार गायी गई है—

अ) " चरणकमल बंदौ हरि राई । जाकी कृपा
पंगु गिरि लंघै, अधे को सब कुछ दरसाई ।
बाहिरो सुनें, मूक पुनि बोले, रक चलै सिर
छत्र धराइ ।।
सूरदास स्वामी करुणामय बार बार बंदौ
तिहि पाईं ।।

आ) वदौ चरण सरोज तिहारे । सुंदर श्याम
कमलदललोचन ललित त्रिभगी प्रानपिमारे ।
जे पद-पदुम सदा सिव के धन, सिंधु सुता
उन तें नहीं टारे । जे पद् - पदुम तात-सिर
त्रासन मन बच-क्रम प्रह्लाद सभारे ।
सूरदास तेई पदपंकज त्रिबिध-ताप-दुख-हरन
हमारे ।।

अर्चन भक्ति

अर्चन भक्ति साधनो में सर्वश्रेष्ठ है । सगुणोपासना और अर्चन का सर्वाधिक संबध है । सगुणोपासना में ही भगवान की षोडषोपचार-पूजा सभव है । भारतीय संस्कृति की यह विशिष्टता है कि उसमें भगवान को अपने सामने स्थित समझकर अपनी श्रद्धा तथा प्रेम को पूर्ण रूप से प्रकट करने का सदवकाश प्राप्त होता है। वेदिक काल से भारतीयो की मान्यता है कि भगवान सर्वशक्त तथा सर्वव्यापी ही नहीं किन्तु सर्वाकार है । वे सगुण तथा निर्गुण अर्थात् गुणातीत दोनो है । भारतीयो केलिए साकार-निराकारोपासना में भेद नहीं है । पुरदरदास के विचार, गोपालदास का मन्तव्य आदि भारत की प्राचीन परंपरा का ही अनुगामी हुए । उनके विचारो का परिचय प्राप्त करें । पुरन्दरदास की वाणी में भगवत् स्वरूप निम्न प्रकार है ।

" अणुवागबल्ल महत्तागबल्ल । अणुमहतेरड़ोदगबल्ल । रूपनागबल्ल अरूपनागबल्ल सगुणनागबल्ल निर्गुणनागबल्ल घटिताघटित चित्याद्भुत । स्वगत नम्म पुरंदर विठ्ठल ।।

(अर्थात भगवान अणु महत तथा दोनों के मिश्रित रूप के सकते है । वे साकार, निराकार

तथा उन दोनो को कभी एक साथ ग्रहण कर सकते हैं। वे सगुण, निर्गुण, व्यक्त, अव्यक्त घटित अघटित रूपो के धारक हो सकते है जिसे कोई सोच भी नहीं सकते। यह हमें अद्भुत लगता है।) अब भगवान की सर्वव्यापकता तथा उनके सगुणाकार का वर्णन गोपालदास जी की वाणी मे सुनें।

"एल्लि नोडलु नीनु इल्लद स्थलविल्ल।
एल्लरतर्यामि एल्लियू नीने।
हुल्लु काष्ट जड चेतनगलल्लि नीनिल्ल-
दिल्लवेन्दु एल्ल स्तुतिसुतिदे ॥
सल्लद ममुजनु निनगे तनगे भेदविल्ला-
वेंबुवनिगे एनेबे हरिये।
जलज नीरोलगिद्दु लेपविल्लदते इल्ल प्रेरकनू
एल्लरल्लियू नीने ॥
चिल्लरे देवर गडगोपालविठ्ठल निन्न बल्लवरे
बल्लरुएल्लररियरु ॥

(हे परमात्मा, तुम जहाँ देखो वहीं हो। ऐसी जगह कहीं नहीं जहाँ तुम नहीं हो। घासफूस, काष्ठ, जड-चेतन सबमें तुम व्याप्त हो। सब यही बताते हैं। अयोग्य मानव मानते है कि तुम और मुझ में किसी तरह का भेद नहीं है। ऐसे मूर्खो के बारे में क्या कहे। तुम सर्वव्यापी होकर सब के प्रेरक हो। तो भी पानी में स्थित कमल के जैसे निर्लिप्त हो। तुम सभी देवो के पति हो। सभी यह नहीं जानते। जो जानते, वे ही जानते हैं।) कबीरदास की मान्यता इसके विपरीत है।

कबीरदास उनको सर्वव्याप्त जानकर भी भगवान की साकारोपासना में मान्यता नहीं रखते। प्रायः इसका कारण यही है कि उनके समय सारे उत्तर भारत में अधिकार में रहने वाले मुसलमान साकारोपासना को दुत्कारते थे और कबीरदास हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए औपनिषदिक विचारधारा से साम्य रखनेवाली निराकारोपासना का प्रचार करने लगे।

कबीरदास की एक रमैनी सुनें।
"अलख निरजन लखै न कोई निरभै निराकार
है कोई ॥
सुनि असथूल रूपनाहि द्रिष्टि अद्रिष्टि छिप्यौ
नहि पेखा।
बरन अबरन कथ्यौ नहिं जाई, सकल अतीत
घटौ रह्य समाई ॥
आदि अत ताहि नहिं मधे कथ्यो न जाई
आहि अकथे ॥
अपरपरा उपजै नहीं बिनसे जुगति न जनिये
कथिये कैसे ॥
जस कथिये तस होत नहीं जसई तैसा सोई ॥
कहत सुनत सुख उपजै, उस परमारथ होई ॥

कबीरदास के समय से सूरदास के समय तक उत्तरभारत मे साकारोपासना के प्रति सामान्य जनता में जिस शका का भाव था उस का निवारण सूरदास से रचित भ्रमरगीत से निरसन हुआ। सूरदास ने निराकारोपासना की दुर्गमता एवं साकारोपासना की सुगमता का सदेश अपनी इस महान् कृति से सर्वत्र प्रसारित किया और उसके फलस्वरूप, रहीम, रसखान जैसे मुसलमानो भी साकारोपासना को न केवल मान्यता दी किन्तु उसकी प्रशसा केलिए सैकडो भक्ति पूर्णपद रचे। सूरदास कृत साकारोपासना की प्रशंसा सुनिये।

"रूप रेख गुन जाति जुगुति बिनु निरालंब मन
चकृत धावे।
सब विधि अगम विचार हिंताते "सूर" सगुन
लीलापदं गावे ॥"

तुलसीदासजी से भगवत् स्वरूप के बारे मे उन के विचार सुनें—
"अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध
अनादि अनूपा ॥
मोरे मत बड नामु दुहूँ ते। किएं जेहिं जुग
बस निज बूते ॥
प्रौढ़ि सुजन जनि जानहि जनकी। कहेउं
प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥
एक दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म
विवेकू।
उभय अगम जुग सुगम नाम ते। कहेउँ नामु
बढ ब्रह्म राम ते ॥
व्यापकु एकु ब्रह्म अविनासी। सत चेतन घन
आनंद रासी ॥
अस प्रभु हृदय अछत अविकारी। सकल जीव
जग दीन दुखारीं ॥
नाम निरूपन नाम जतन तें। सोउ प्रगटत
जिमि मोल रतन ते ॥

श्री तुलसीदास के पश्चात् साकारोपासना की उत्कृष्टता एवं अर्चन से होनेवाले लाभालाभ के विषय में साधारण जनता को उन्नीसवी शती के अन्त तक किसी तरह की शंकापूर्ण दृष्टि नहीं रह पायी। कर्णाटक के हरिदासो से अर्चन का जितना विशद वर्णन और गुणगान किये गये है उत्तर भारत के भक्तो से रचित पदो में दृष्टिगोचर नहीं होते। इसका कारण उत्तर भारत की राजकीय परिस्थिति ही है। दक्षिण भारत में यह अडचन नही थी।

कबीरदास मूर्तिपूजा के विरोधी थे। उन का कथन है कि

जो पाथर कउ कहते देव, नरकी बिरथा होवे सेव ।
जो पाथर की पाई पाई, तिस की घाल अजाई जाई ।
ठाकुर हमारा सदा बोलता, सख जीआ कउ प्रभु दानु देता ।।

कनकदासजी का निम्नांकित पद कबीरदास की उपयुक्त मान्यता का खण्डन करता है। कनकदासजी के अभिप्राय सुनें ।

"अहुदादरहुदेन्नि इल्लवादरिल्लवेन्नि । बहुजनरु नेरेतिलिदु पेलिमत्तिदनु ।
देवरिल्लद गुडियु हालुबिद्दगाडियु । भावविल्लद भकुति अदु कुहुक युकुति ।

(सच होतो कह दो - ठीक है । नही तो बता दो मेरी बात गलत है । बहुत से लोग मिलकर मेरे कथन का विचार करके अपने निर्णय दे दें । मेरा अभिप्राय है कि देव - मूर्ति - रहित मन्दिर सामानो के बिना दूकान एव भाव - रहित भक्ति ये तीनो धूर्तों की कुहक-युक्तियो के ही समान है ।)

कनकदास के ही समान विजयदास का भी कथन सुनिये ।

"कल्लिनिंदले सर्वफलवाहोदो । कल्लुभजिसिदरे कैवल्यकेरुवदो।। "

विजयदास कहते है—पत्थर से ही सभी फल प्राप्त होते है । पत्थर की पूजा न करे तो कैवल्य कैसे मिल सकता है । पत्थर अर्थात् पहाड से मन्थन करके देवासुरो ने अमृत को प्राप्त किया। पत्थर को उठाने से ही सभी वर्षा से बचे । पत्थर के स्पर्श से वह औरत हो गयी । पत्थर से ही लंका का मार्ग सुलभ हो गया । पत्थर के अन्दर भगवान आविर्भूत होकर दर्शन देंगे। पत्थर का मोल करोड़ो वस्तुओं से मूल्यान है ।

इसका तात्पर्य है कि मूर्तिपूजा नितान्त लाभप्रद है । अर्चावतारो के अर्चन से कैवल्य या मोक्ष - प्राप्ति अतीव सुगम हो जाती है । जब देव और दानव मन्थर पर्वत से क्षीर सागर को मथने लगे तो उस से अमृत उदुभूत हुआ । जब पत्थर के रूप में स्थित अहल्या से श्रीरामचन्द्र जी का पाद स्पर्शा हुआ तो अहल्या का शापविमोचन हुआ और उसे अपना पूर्व रूप मिल गया । लंकापुरी समुद्रमध्य स्थित एक द्वीप पर थी । उसे पहुँचने वानरो के द्वारा एक पुल बनवाया गया । पत्थरो के बिना पुल बन नहीं सकता था । चूंकि भगवान सर्वशक्त है, वे भक्तो को उनके दर्शनार्थ अर्चारूप में व्यक्त होते है । वज्रवैडूर्य आदि बहुत सी कीमती वस्तुएँ पत्थर ही है । इससे पत्थर को क्षुद्र मानना न समझने के अतिरिक्त अन्यथा नहीं है ।

उन्हीं कही वाणी में पत्थर का महत्व सुनें—

आकल्लु कडेयुतिरलु अमृतने पुट्टितु । कल्लु येत्तलु मलेयोलेलूरु उलिदरु ।।
कल्लु हरिपादवनु सो के हेण्णायितु। कल्लु लकेगे मार्ग चेन्नागि शोभिसितु ।।
कल्लि नोलगे देवनोडमूडि काणिमुव । कल्लु कोट्यानु कोटिगेल्ल बेलेयायितु ।।

कबीरदास के अभिप्राय मे मन्दिर आदि निष्प्रयोजक है । वैसे ही उनके अभिप्राय से माला तिलक आदि का धारण, फल-पुष्पो से मूर्तिपूजा आदि बेकार है सुनिये ।

अ) अलहु एक मसीद बसतु है अवरु मुलखु किस केरा ।
हिन्दू मूरति नाम निवासा दुइ महि ततु न हेरा ।
देखन देस हरी का बासा पछिमाहि अलह मुकामा ।
दिलि माहि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर मुकामा ।

आ) माथे तिलकु हथि माला बाना ।
लोगन रामु खिलउना जाना ।।
जउ हउ बउरा तउ राम तोरा ।
लोगु मरमु कह जाने मोरा ।।
तोरडन पाती पूजउ न देवा ।
राम भगति निहफल सेवा ।।

श्री गोविंदराज स्वामी जी के मंदिर में विराजमान उभय देवेरियो सहित श्री वेकटेश्वर स्वामीजी का उत्सव मूर्ती, तिरुपति.

प्रसन्न वेंकटदास जी से अर्चन की महिमा सुनें

अनरंगद शुद्धिलि तन्नय बाह्यतर परिपूर्णन ।
चिंतिसि सर्वस्वतंत्र श्रीहरिवेदतत्रोक्त पथदि
निरंतर मरेयदे ।।
पृथु ध्रुव अबरीश सुधर्मज दिविजोद्भव अक्रूर
सात्यकि यदुकुल सुरऋषि—
यतिततिं अर्चिसि अति धन्यरादरेदरु । ''

(श्रीहरि बाह्य एव अंतः परिपूर्ण है । वेदों एव तत्रो में वर्णित विधानो के अनुसार पृथु, ध्रुव, अबरीश, सुधर्म के पुत्र, दितिपुत्र अक्रूर, कृतवर्मा, सात्यकि, मादव देर्वाष, यतिश्रेष्ठ आदि उनका अर्चन करके अतरंग शुद्धि से उनको मनन करते अति धन्य हुए ।)

सूरदास के निम्नांकित पद में यही भाव व्यक्त किया गया है—

'' अम्बरीश - राजा हरिभक्त । रहे सदा हरिपद
अनुकूल ।
पतिव्रता ता नृप की नारी । अहनिसि नृप की
आज्ञाकारी ।
इन्द्रीसुख को दोउ त्यागि । धरे सदा हरि पद
अनुरागा ।
ऐसी विधि हरि पूजे सदा । हरिहित लावे सब
संपदा ।
ले चरनोदक निज व्रत साध्यो । ऐसी विधि
हरि को आराध्यो ।। ''

अब कर्णाटक के हरिदासो से अर्चन करने के विधान और अर्चन भक्ति से प्राप्त होनेवाली सिद्ध की बातें सीखें । विजयदास का उपदेश है यथा—

नित्यतृप्त सर्वसार भोक्त पुरुषोत्तम ।
अचत्यमहिम भक्तवत्सल सत्य सकल्प हरिगे ।
नानोपचारदिदं भक्तिवेग्गलवगि मज्जनादिय
माडि ।
चित्तनिर्मलदिदं नाना सौख्यवागिह उत्तम पदार्थ
सुपक्ववगैसि ।
आत्मन मुभागदोछिरिसि स्तोत्रंगलिंद तुत्तु सम-
र्पिसि ध्यानमाडि ।
तेत्तिग नानेंदु अडिगडिगे हिग्गी तन्न सत्प्रवृत्ति-
गलिगे हरियें एदु ।
विस्तारवागि तिलिदु निजवागि ब्रह्मादि देवते-
गलिगे मत्ते ।
सनकादिगलिगे मत्ते शुक मोदलाद अवतारजनके।
तारतम्यदिंद कोडलि बेको मनुज ।। ''

(अर्थात् नित्यतृप्त सर्वसारभोक्ता पुरुषोत्तम, अचित्य महिमावाले भक्तवत्सल एवं सत्य-संकल्प हरि को भक्ति से उपचारो के साथ स्नान कराओ । तब भगवन्मूर्ति को अपने सामने रखकर उत्तम खाद्य, पानीय आदि से स्तुति करते हुए सत्कार करो । आतिथ्य को स्वीकार करते हुए भगवान को हर्षोन्माद से ध्यान करो और समझो कि मेरी सत्प्रवृत्तियो के प्रेरक भगवान हरि ही है । इस के पश्चात् ब्रह्मा आदि देवताओ, शुक आदि अवतार पुरुषो आदि का तारतम्य - भाव से सत्कार करना चाहिए ।

आ) '' तमगिष्टवाद प्रतिमेयनु सुलक्षण उल्ल
दोन्दु क्षिप्रमतियल्लि ।
दणि दणि नोडुन मुभागदल्लि इट्टु मणिमय
मुकुट काचन तोडिगेय तो डिसि ।
गुणगण-परिपूर्णनेदु इनितु चिंतिसि प्रतीक-
दोलिगे ।। ''

(अपने इष्टदेव की मूर्ति को अलंकृत करके सामने रखो । उसे मणिमय मुकुट, कनकांबर आदि पहनाते तब तक उसका सौन्दर्य देखते रहो जब तक तुम्हे पूर्ण तृप्ति नहीं मिलती । तब उस सकेत में यह देखने का अनुभव करो कि वे इष्टदेव समस्त कल्याण-गुणो से परिपूर्ण हे ।)

इ) '' एढुरिलि मूर्तियनिडु पूजिसि, तन्न सद-
मलदृष्टिलि नोडि नोडि ।
पदमूल पिडिदु किरीट पर्यन्त इदे इदे परि-
यल्लि निरीक्षिसुता ।
सुधेयनुकुडिदंते इदे मूर्तियबहिर ध्यानचन्नागि
निल्ललागी ।।
ओदगि वासनामय जडदिद निर्माण हृदय-
दोलगे बेग माडिकोडु ।
मदने पूजिसबेकु मरलि मरलि चिन्तदलि
नितल्लि कुछितरे मलगिदरे ।
इदे इदे अभ्यास माडलु बहुजन्मदलिट्ट वासन-
मय मूरुति पदेपदिगे ।
इदुरलि इट्टिद्द द्रवइद्दते मदनजनक नम्म विजय
विठ्ठलरेय ।
इदने हिंदु माडि होसपरि तोरिसुव ।। ''

(सामने भगवन्मूर्ति को रखकर पूजा करके सदमल दृष्टि से देखते रहो । मूर्ति के पाद-मूल से किरीट तक ऐसे ही देखते हुए सुधा-पान के जैसे सुख का अनुभव करो । इस प्रकार के बाह्य-ध्यान का अभ्यास स्थिर होने के पश्चात् वासनामय जड-निर्मित हृदय के अन्दर धारण करके बार बार मन में उसी की पूजा करते जाओ । खडे, सोते बैठते इस प्रकार के अभ्यास करने से सामने रखे हुए चमकते द्रव्य के समान मदन-जनक विजयविठल दर्शन देते रहेगे ।

(क्रमशः)

(पृष्ठ १९ का शेष)

'' है कोइ सन्त सहज सुख उपजै,
जप तप देउं दलाली ।
एक कॅद भरि देइ राम रस,
ज्यू भरि देइ कलाली ।।
काय कलाली लाहनि करिहूँ,
गुरु सबद गुड कीन्हा ।।
कामौ क्रोध मोह मद मत्सर,
काटि काटि कस दीन्हा ।।
भुबन चतुर्दस भाटी पुरई,
ब्रह्म अगिनि परि जारी ।।
मूंदे मदन सहज धुनि उपजी
सुखटन पोतन हारी ।।
नीझर झरै अभीरस निकसै
तिहि मदिरावल छाका ।।
कह कबीर यह वास निकट है
ज्ञान गुरू है बाका ।। ''

कबीर कहते हैं :

मैं ने शरीर की कढाई बनाकर उसमें गुरु - शब्द का गुड डाला । काम क्रोध, मोह मद, मत्सर के टुकड़े - टुकडे करके उनका रस इस कढाई मे निचोडा । चौदह भुवन की भट्टी बनाकर उसके नीचे ब्रह्माग्नि प्रज्वलित की । उसके सामने मदन की बलि दी । ऐसा करने से सहज नाद [अनाहत नाद] उत्पन्न हुआ, फिर कढाई से उफन कर अमृत रस का झरना बहने लगा । सुषम्ना नाडी को मदिरा बॉटने वाली स्त्री बनाई । इस से यह पोषक रस इन्द्रियो को मिलने लगा । इस मदिरा को प्राशन कर मै मस्त हो गया । ऐसा जीवन अत्यन्त कठिन है । जो पुरुष सद्गुरु से इसका ज्ञान प्राप्त करते हे वे ही इस में निष्णात होते हे ।

कबीर दास फिर पूछते है—क्या सहज - सुख प्राप्त करा देने वाला कोई सत है ? जिस प्रकार मदिरा पिलाने वाली प्याला भर कर मदिरा पिलाती है उसी प्रकार इस दिव्य मदिरा की एक भी बूँद यदि कोई मुझे दे तो मै उसे अपना सर्वस्व - जप तप दलाली में दे दूँगा ।

ब्रह्म वित् आप्नोति परं

सोऽश्नुते सर्वान् कामान्
सः अश्नुते सर्वान् कामान्
सह ब्रह्मणा विपश्चिता इति ॥
इसके पहले कहा गया है,
"ब्रह्मवित् आप्नोति पर
तदेषा अभ्युक्ता
सत्य ज्ञानं अनंतं ब्रह्म
योवेद निहितं गुह्यां परमे व्योमन् ।

इस प्रकार ब्रह्म वेत्ता के द्वारा परतत्व की प्राप्ति उद्दिष्ट है। अन्यत्र कहा भी गया है, ब्रह्म वित् ब्रह्मा एवं भवति ।" फिर भक्त उसके साथ सभी कामो की उत्पत्ति, तथा प्राप्ति की गुंजाइश कहाँ! कमा यत्त विरोधा भास सा नहीं दीख रहा है। इस पर जरा विचारें :—

ब्रह्म तो सत्य, ज्ञान तथा अनंत रूपी है। अनंत से अनादि भी अभिहित होता है। आद्यंत रहित सत्य ज्ञानात्मक परतत्व के साथ आद्यंत कान कामो के सह अस्तित्व अथवा उसकी प्राप्ति के पश्चात् कामोत्पत्ति, तत्प्राप्ति की चेष्टा आदि का संबंध जुडा नहीं रहता। फिर उक्त पंक्तियो का आशय क्या है? क्या इनको ब्रह्म प्राप्ति की महत्ता की प्रशंसा करनेवाली पक्तियाँ मान कर संतुष्ट हो जावे। अथवा इनका कुछ विशेष उद्देश्य अभिहित है! मेरे मन में ये बातें आती हैं :—

असल में हमारा दर्शन ही ऐसे विरोधाभासो का निलय है। इनका समाधान भी सरल ही है। समाधानो के बिना हम अपने दर्शन के प्रधान तत्वो से अवगत हो ही नहीं सकते। लौकिक व्यवहार में हम देखते हे, साधारणतया कोई राजनीतिक दल पहले प्रतिपक्षी दल की नीतियों का खंडन करता है। पश्चात्, स्वपक्ष की स्थापना के पश्चात् भले ही उन्हीं को फिर स्वीकार क्यो न करे! हमारे आचार्यो ने भी अपने पक्ष के समर्थन में इसी विधान का अवलबन किया है।

हम ने पहले कहा, "क" ब्रह्म नहीं है; "ख" ब्रह्म नहीं है। फिर अंत तक जाकर कह दिया "सर्व खलु इद ब्रह्म" ब्रह्मानुभूति की दृष्टिकोण से विश्व से व्यक्ति के चार प्रकार से अनुभव होते हैं :—

१) हमारा दृश्यमान इत्यादि धर्मो वाला विश्व यथार्थ है।

२) उक्त व्यावहारिक विश्व की यथार्थता मायाजनित है। अर्थात् व्यावहारिक विश्व अयथार्थ है।

श्री पिडपर्ति वेंकट रामशास्त्री
कोसपेटा

३) व्यावहारिक विश्व पारमार्थिक दृष्टि से ब्रह्म है अतः यथार्थ है।

४) व्यावहारिक विश्व और ब्रह्म भिन्न नहीं है, व्यावहारिक विश्व से परे ब्रह्म का अस्तित्व नहीं है। अतः ब्रह्म के अतर्गत ही व्यावहारिक विश्व का अस्तित्व है। अतः यह सत्य है। अब हम पहले व्यावहारिक विश्व को सरल भाषा में समझने का यत्न करेगे।

हम प्रयोग करते है, कि यह कागज है; यह पुस्तक है! इत्यादि! ये हमारे व्यवहार में सत्य ही है; क्यो कि विविध भाषाओ में विविध शब्दो के प्रयोगो के द्वारा इन उद्देश्यो को समझा जा रहा है। अतः हम इन्हें असत्य नहीं कह सकते।

परंतु हमारे प्रयोगो के द्वारा जो सत्य होते हैं; ये परमार्थ में सत्य नहीं है। क्यो कि इन की आदि है। अतः अंत भी है। अतः आद्यंत वाली वस्तु सत्य नहीं हो सकती। जहाँ तक हमारी दृष्टि जाती है, जिनकी न आदि, और न अत मिलता है, वही सत्य है। अतएव ब्रह्म सत्य है।

किंतु वह ब्रह्म हमारे व्यावहारिक विश्व से बाहार अन्यत्र कहीं नहीं है। नहीं रह सकता। कोई यह आक्षेप कर सकते हे, कि कल्पांत में व्यावहारिक विश्व नहीं रहता; केवल ब्रह्म ही रहता, है अथवा न व्यवहार रहता है, और न ब्रह्मा वास्तव में हम यह स्वीकार नहीं कर सकते। कल्पांत के संबंध में और कल्पादि के संबंध मे - वास्तव में जिन के अस्तित्व पर हम न विचार कर सकते है, और न अनुभव कर सकते हे— व्यवहार करते ही हे। कल्पॉत मे जो कुछ रहता है। वह ब्रह्म ही है, और आज हम उस का व्यवहार भी करते हे। जब हम रहेगे, व्यवहार करेंगे ही। और जब हम न रहेगे, और व्यवहार न रहेगा, तब भी - जो कुछ (व्यावहारिक विश्व के खडहर के रूप में बचा रहेगा, वह ब्रह्मा ही होगा।

इस ब्रह्म का ज्ञान तथा ब्रह्म की अनुभूति हम में होगी, तो हम व्यावहारिक विश्व - ब्रह्म - से - अपने को अभिन्न मानते है। उस मानसिक अवस्था में हमारे लिए-केवल हमारे लिए वैयक्तिक रूप से कुछ भी प्राप्य नहीं होता। क्यो कि हम अपने योग क्षेमो को विश्व के योग क्षेमो में सम्मिलित कर देखते है। इन इच्छाओ के परे रहने की दशा ही ब्रह्मानुभूति है। इस अनुभूति में व्यक्ति का अपना स्वार्थ नहीं होता, क्योकि व्यक्ति अपने स्वतंत्र, भिन्न अस्तित्व का अनुभव नहीं करता समाज का श्रेय ही व्यक्ति का श्रेय है। अतएव हमारे आचार्यो ने व्यक्ति को ब्रह्म ज्ञान प्राप्ति, ब्रह्मानुभूति, ब्रह्माचरण आदि की प्राप्ति के पश्चात् काम प्राप्ति का विधान किया है।

नारायणवन स्थित श्री कल्याण वेकटेश्वर स्वामी जी के मदिर में विराजमान वेदांतदेशिकरु.

हमारे आचार्यों की विचार प्रणाली वैयक्तिक रही है। सामाजिक है। अतएव ब्रह्मनिष्ठ, ब्रह्मज्ञ आदि आदरणीय शब्दों के द्वारा अभिहित होने-वाले ऋषि मुनियों ने भी समाज की उपेक्षा नहीं की। याज्ञवल्क्य आदि ब्रह्मज्ञ होते हुए भी सांसारिक धर्मों के अतीत नहीं थे। अत: यदि उपनिषद् यह कहे, कि ब्रह्म ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात्, ब्रह्म होने के पश्चात् भी मानव सभी कामों को प्राप्त करता है, तो उस में कोई विरोध नहीं पाया जा सकता, और न उस को प्रशस्ति कह कर उडा दिया नहीं जा सकता।

अपितु अन्य और ब्रह्मज्ञ की काम प्राप्ति में विशेषता है।

अतएव यह दुहराया गया है, "सह ब्रह्मणा विपश्चिता।"

इसका तात्पर्य यह है। ब्रह्मज्ञ होने के बाद जब मानव कामोपभोग करता है, तब वह शोक, मोह आदि के वशीभूत नहीं होता। पूर्ण ब्रह्मत्व की प्राप्ति के पश्चात् उसके योगभ्रष्ट होने की भी गुंजाइश नहीं है। "विपश्चिता" शब्द से यही सतर्कता अभिप्रेत है।

गीता के अर्जुन को देखिए। उस ने पहले सोचा,-भीष्म, द्रोण आदि मेरे गुरु इत्यादि हैं, उनकी हत्या कैसे करूँ?

इस पर गीताकार ने अपने उपदेश आरंभ किए

अशोच्यानन्वशोचस्त्व इत्यादि से लेकर "सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेक शरण व्रज" तक उपदेश चले। फल स्वरूप जिन आचार्यों आदि की हत्या करना वह अयुक्त समझता था, उन्ही की हत्या की। परंतु आदि की मनोवृत्ति अत की मनोवृत्ति भिन्न थी। आदि मे विचार था, इस युद्ध से मुझे क्या मिलता है। अंत में इस का विरुद्ध मानसिक आलोक प्राप्त हुआ। रण-क्षेत्र मे जब कोई व्यक्ति आता है, तब वह न किसी का बंधु है, और न मित्र। सामने शत्रु ही रहता है। शत्रु दल का सहार वीर का कर्तव्य है। दुर्योधन आदि सामती सभ्यता के पोषक थे। पांडव दुर्बल वर्ग के थे। पीडित जनता की रक्षा के अर्थ अस्त्र उठाने मे अर्जुन ने समु-चित कार्य ही किया। उस के मन मे आरंभ के आचार्य, मातुल, और माता आदि नहीं थे। पीडित प्रजा और पीडक सामत। दुर्बल और बल गर्वित। इसी दृष्टि से कृष्ण ने अर्जुन को भारत युद्ध लडने को आदेश दिया और अर्जुन ने अपने सारथि के आदेश का पालन किया, इसी उद्देश्य से।

यहाँ वैयक्तिक स्वार्थ का अस्तित्व समूहिक स्वार्थ मे निहित स्पष्ट हो गया है।

हे मुरारी दीन जन विपदा करो

* श्री जगमोहन चतुर्वेदी, हैदराबाद. *

जीवन मेरा अब हो रहा है भार।
कहो कैसे चलाऊँ अपना संसार॥
सेवा करने को ढूंढ़ता घर द्वार।
पर न सुनता कोई मेरी पुकार॥
देखकर उनका यह व्यवहार।
इच्छा होती फेंकने को जीवन हार॥
पर न है मुझ में योगियों का बल अपार।
क्षुद्र जन की तरह बैठ जाता हिम्मत हार॥
ध्यान करता तब मैं श्री मुरारी का।
सामना करने को इस हीनता का॥
आदेश मिलता मुझे श्रीनिवास का।
न है यह कोई विषय चिन्ता का॥
ससार में पुरुष ऐसे हैं अनेक।
जिन्हें न मिलता कही सेवा का टेक॥
ध्यान करता रह तू सदा मेरा।
दु:ख से उद्विग्न न हो मन तेरा॥

यदि चाहता है कल्याण अपना।
सुख का न देख कभी अपना॥
शान्ति का मारग चाहता है यदि पकडना।
मिल जाए सुख तो भी किरात स्पृह रहना॥
जीवन में पूर्ण होती न किसी की आशा।
आशा परम दु:ख का है तमाशा॥
निराशा ही परम सुख शान्ति का सहारा।
न करो अपनी कठिनाइयो का पसारा॥
प्रारब्ध को न कोसो अन्य समझकर।
वह तो है तुम्हारे कर्मो का फल निकर॥
मानो न इस का बोझ सुमन माला समझकर।
सहलो सब विपत्तियो को मौन होकर॥
यद्यपि प्रारब्ध का भार होता है प्रखर।
हलका होता है वह भोगने ही पर॥
दशरथ न कर सके इसे अमर।
भोगना पडा उन्हे राम-वियोग में प्राण देकर॥
चित्त अपना हरि-ध्यान में मग्न कर दो।
शुक-मंत्र का जप निरन्तर करते रहो॥

बुद्धि-बल से मन को कर ही कर दो।
इन्द्रियों को ईश-चरण-कमलों में जकड दो॥
भगवान हैं करुणा निधान।
भक्त वत्सल माता समान॥
जो उन्हें जग जननी समझता।
उसे कोई न कभी सता सकता॥
मीरा ने प्रभु को पुकारा यंचणा से दलित होकर।
प्रार्थना भी हरि की उत्कठा से आर्तवन कर॥
प्रभु ने निज भक्त के अति दीन वचन सुनकर।
भक्त वत्सलता निभाई नव जीवन दान देकर॥
द्रौपदी की लाज राखी, ग्राह से गज को उबारो।
प्रह्लाद की रक्षा निमित्त, रूप नरसिंह को धारो॥
अंबरीष की प्राण रक्षा हेतु चक्रसुदर्शन सारो।
हे मुरारी दु:ख हारी, दीन-जन विपदा हरो॥

(पृष्ठ १४ का शेष)

वाक्कम् ग्राम मे परमसात्विक 'नम्बि' (पूर्ण) नामक एक विद्वान भगवद्भक्त श्रीवैष्णव निवास किया करते थे। उनका सारा समय भगवान् की उपासना और आराधना मे ही व्यतीत होता था। एक दिन सोते हुए रात मे उन्हे काची के वरदराज भगवान् ने दर्शन देकर कृपा करके सरस रहस्यमय वेदान्तार्थो का सदुपदेश दिया। उनकी बढती जिज्ञासा को देखकर भगवान बोले तुम उभय कावेरी के बीच बसी हुई श्रीरगपुरी में जाकर कुछ दिनो निवास करो! मै तुम्हे पुनः इससे भी अद्भुत भक्तिमय रहस्यार्थो का सदुपदेश दूँगा। जागने पर 'पूर्ण' ने अपने ऊपर भगवान की असीम-अनुकम्पा का अनुसन्धान किया और उनकी आज्ञा को शिरोधार्य कर बडी श्रद्धा मे श्रीरगपुरी मे जाकर स्वप्न में सुने सरस सदुपदेशो का ध्यान करना प्रारभ किया। एक दिन वे किसी मन्दिर के एकान्त भाग में बैठकर स्वप्नार्थ का चिन्तन कर रहे थे, उसी समय वहाँ अपने अन्तरग शिष्यो को रहस्यार्थो का उपदेश देने केलिए श्रीमल्लोकाचार्य स्वामीजी भी आ पहुँचे और उपदेश सुनाने लगे। वे पूर्ण नामक श्रीवैष्णव भी बडी उत्सुकता से उन उपदेशो को सुनने लगे। उन्हे बडा ही आश्चर्य हुआ, कारण उन्होने स्वप्न में भगवान के मुखारविन्द से जिन रहस्यार्थो का श्रवण किया था ठीक वही उपदेश आचार्य भी कर रहे थे। फिर तो विनतभाव से आचार्य को भगवद्रूप मानकर हाथों को जोडकर 'पूर्ण' ने पूछा—"क्या आप वही?" आचार्य ने उनके अभिप्राय को न समझ कर पूछा—मै नही समझ पाया आप क्या कह रहे है? तब पूर्ण ने अपने स्वप्न एव वहाँ निवास की सारी घटना कह सुनाई। यह सुनकर वहाँ उपस्थित सभी शिष्यगण मन्त्रमुग्ध से हो गये। पूर्ण के साथ सभी शिष्यों ने आश्चर्यचकित हो आचार्य को भगवान का विशेषावतार मानकर अत्यन्त अनुराग के सहित उनसे रहस्यार्थो का श्रवण किया। कुछ दिनो निरन्तर रहस्यार्थ सुनने के बाद श्रीपूर्ण ने अपने स्वप्न की एक दूसरी घटना सुनाते हुये आचार्य से कहा—प्रभो! आज रात में शेषशायी भगवान रंगनाथ ने स्वप्न मे दर्शन देकर कहा है। साधो! मैंने वरदराज के रूप में जिन मधुरतम अर्थों का उपदेश दिया था उन्हीं विषयो का उपदेश तुम लोकाचार्य से सुन रहे हो; अतः उनसे प्रार्थना करो कि वे उन रहस्यमय उपदेशो को लोकोपकार केलिए ग्रन्थ के रूप में लिख दें, जिससे उनकी परम्परा चिर काल तक चलती रहे। प्रभु का यह आदेश सुनकर आचार्य अत्यन्त विस्मित और हर्षित होकर मन ही मन यह विचार करने लगे— अहो प्रभु का मेरे ऊपर कितना वात्सल्य है, जो मेरे साधारण मे रहस्यार्थ के उपदेश श्रीरगनाथ और श्री वरदराज दोनो को ही प्रिय है। तदनन्तर भगवान के आदेश को शिरोधार्य कर आचार्य ने 'श्रीवचनभूषण' नाम से प्रसिद्ध सारतम रहस्य-शास्त्र की रचना की। इस ग्रन्थ पर पुरातन भाष्य के आधार पर श्रीमज्जगदाचार्य विष्वक्सेनाचार्य त्रिदण्डी स्वामीजी महाराज ने चिन्तामणि नाम की विस्तृत हिन्दी व्याख्या लिखी है। व्याख्या सहित श्रीवचन भूषण जिज्ञासुओ के लिये पठनीय और सग्रहणीय है।
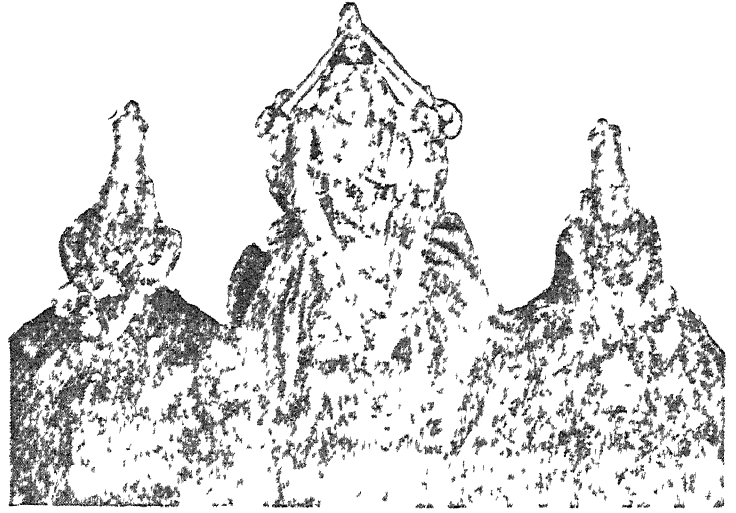
श्री गोविंदराजस्वामीजी का मन्दिर, तिरुपति.

दैनिक – कार्यक्रम

सवेरे :	5–00	से	5–30	तक	. . . .	सुप्रभातम्
	5–30	से	8–30	तक	.	विश्वरूप सर्वदर्शन
	8–30	से	9–00	तक	. . . .	शुद्धि
	9–00	से	9–30	तक	. .. ...	तोमाल सेवा
	9–30	से	10–00	तक	.. . . .	अर्चना
	10–00	से	10–30	तक	.. .	घटी तथा सातुमुरै
	10–30	से	12–30	तक	.. ..	सर्वदर्शनम्
	12–30	से	1–00	तक	.	दूसरी घटी
शाम को	1–00	से	6–00	तक	... .	सर्वदर्शनम्
	6–00	से	7–00	तक	... . .	रात के कैंकर्य
	7–00	से	8–45	तक	. .. .	सर्वदर्शनम्
	9–00	बजे			... .. .	एकातसेवा

तोमाल सेवा, एकात सेवा : 13/- रुपये का एक टिकेट (चार आदमी जा सकते है)

अर्चना . 7/- रुपये का एक टिकेट (तीन आदमी जा सकते है)

सूचना त्योहार के दिनो मे तथा विशेष दिनो मे, अर्थात्, उत्तरा, एकादशी, शुक्रवार तथा रविवार एव उत्सव के दिनो मे समयो की सूचना मदिर के सूचना-बोर्ड पर दी जायगी तथा यात्रियो को भी लाउड-स्पीकरो के द्वारा घोषणा कर सूचना दी जायगी।

तिरुमल – यात्रियों को सूचनाएं

कलियुगवरद भगवान बालाजी संसार के कोने कोने से अगणित भक्तों को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। हर रोज हजारों भक्त कलियुगवैकुण्ठ तिरुमल का दर्शन कर पुनीत होते हैं। तिरुपति तथा तिरुमल पहुचनेवाले इन असंख्य भक्तगणों की सुविधा (यातायात, आवास, बालाजी का दर्शन इत्यादि) केलिए ति ति देवस्थान उत्तम प्रबन्ध कर रहा है। इन सुविधाओं के अतिरिक्त यात्रियों के भोजन की समस्या की ओर भी ध्यान दिया जा रहा है। देवस्थान की ओर से भोजनशालाओं की व्यवस्था तो है ही है उसके अतिरिक्त तिरुमल पर अन्य भोजनशालाए भी है जिन में भोजन पदार्थों की दरें ति ति. देवस्थान के द्वारा नियन्त्रित की जाती हैं। अतएव यात्रियों से निवेदन है कि वे इन भोजन सुविधाओं का उपयोग करें।

तिरुमल पर भोजन सुविधाए

ति. ति. देवस्थान का अतिथि गृह

जलपान	(समय)	प्रातः	६ बजे से ९ बजे तक
		दोपहर	३ ,, शाम ६ ,,
भोजन	,,	प्रातः	११ ,, दोपहर २ ,,
		रात	७ ,, रात ९ ,,

यहां पर मिठाई, नमकीन, चाय, काफी इत्यादि पदार्थ उपलब्ध है।

भोजन (full) रु. ३–००

जो लोग यहां से भोजन अथवा जलपान प्राप्त करना चाहते है उनको नियमित समय के तीन घंटे के पूर्व ही आर्डर (order) देना चाहिए।

काफी बोर्ड (कल्याणकट्टा के पास)

यहां पर केवल जलपान प्राप्त कर सकते है।

समय – प्रातः ५ बजे से रात १० बजे तक

काफी बोर्ड (क्यू शेड्स के पास)

यहां पर दहीभात, हल्दीभात तथा शीत पेय प्राप्त होते है।

समय प्रातः ५ बजे से रात १० बजे तक

टी बोर्ड (ए टी. काटेज के पास)

यहां पर चाय तथा बिस्कुट प्राप्त होते है।

समय : प्रातः ५ बजे से रात ९ बजे तक

अन्नपूर्णा भोजनालय

यहा पर अनेकविध मिठाई, नमकीन आइस क्रीम, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते हैं।

(समय) प्रात : ५ बजे से रात १० बजे तक

भोजन समय – प्रातः ९ बजे से शाम ३ बजे तक

तथा

शाम ६ बजे से रात १० बजे तक

भोजन (थाली)	रु. १–७५
अतिरिक्त प्लेट भात	रु ०–६०
भोजन (full)	रु. ३–००

वुडलॉंड्स (ति ति.दे के अतिथिगृह के पास)

यहा पर जलपान, भोजन, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते है।

जलपान	(समय)	प्रातः ६ बजे से रात १० बजे तक
भोजन	,,	प्रातः ११ बजे से दोपहर २–३० बजे तक

मद्रास भोजन	रु. ४–००
उत्तर भारतीय भोजन	रु. ६–००
प्लेट भोजन	रु. १–७५

तिरुपति में देवस्थान का भोजनालय

ति ति देवस्थान का भोजनालय (पहली धर्मशाला)

समय प्रातः ५ बजे से रात ९ बजे तक

यहा पर जलपान, आम्प्रो बिस्कुट तथा शीत और गरम पेय प्राप्त होते है।

ति. ति. देवस्थान का भोजनालय (दूसरी धर्मशाला)

यहा पर जलपान, भोजन, शीत तथा गरम पेय प्राप्त होते है।

जलपान	(समय)	प्रातः ५ बजे से प्रातः ९–३० बजे तक
		दोपहर २–३० ,, शाम ६ बजे तक
भोजन	,,	प्रातः १०–३० ,, दोपहर २ बजे तक
		६–३० ,, रात ८ ,,

प्लेट भोजन	रु. १–५०
अतिरिक्त भात (३५० ग्राम)	रु १–००
दही	रु. ०–४०

तेलुगु मूल
श्री एस. वी. रघुनाथा-
चार्य एम. ए,
एस वी. यूनिवर्सिटी,
तिरुपति

हिन्दी अनुवाद
श्री सी रामय्या.

सकल देवता पूजा विधि

(गताक से)

उदहृत पद	सुहागिन स्त्रियो को प्रयोग करने लायक पद	विधवा स्त्रियो को प्रयोग करने लायक पद
श्रीमान्	श्रीमती	पुण्यवती (तीर्थवती)
गोत्र	गोत्रवती	गोत्रवती
नामधेय	नामधेयवती	नामधेयवती
धर्मपत्नी समेत	(कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है)	(कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है)
श्रीमत	श्रीमत्याः	पुण्यवत्या (तीर्थवत्याः)
गोत्रस्य	गोत्रवत्याः	गोत्रवत्याः
नामधेयस्य	नामधेयवत्याः	नामधेयवत्या.
धर्मपत्नी समेतस्य	कुछ कहनी नहीं है	कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है

कलशाराधन

तदगकलशाराधनं करिष्ये कलश गन्धपुष्पा-
क्षतैरभ्यर्च्य

में शोडषोपचार पूजाग सहित कलशाराधन करता हूँ ऐसा कहकर अक्षत तथा पानी को छोडना चाहिए। जलपूर्ण ताबे के कलश के चारो ओर गन्ध तथा कुकुमाक्षतो से सजाकर, अन्दर पुष्प डालकर, दाये हाथ को कलश के ऊपर रखकर "कलशस्यमुखे" मत्र का उच्चारण करना चाहिए।

कलश के मुख मे विष्णु, कण्ठ मे रुद्र, मूल में ब्रह्मा, मध्य भाग में मातृगण आश्रय करते है। अन्दर जल मे समस्त समुद्र है। और इस कलश मे गगा, यमुना, सरस्वती, कृष्णवेणी, गोदावरी, नर्मदा, सिन्धु, कावेरी नदियां है। आप सब आकर विराजमान रहें।

कलशोदक को पुष्पो से लेकर भगवान के ऊपर छिडकर अपने ऊपर छिडकाना चाहिए। उस के बाद सभी पूजाद्रव्यो पर छिडकना चाहिए।

ध्यानम्

एकाग्रता से अपने अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।

श्रीविष्णुध्यानम्

सस्य पाद प्रसार्य श्रितदुरितहरं दक्षिणं कुच-
यित्वा

शिवध्यानम्

कलाभ्यां चूडालकृत शशिकलाभ्यां निजतन·

आवाहन

मानसाराधन कृत्वा मन में ध्यान करके भावनात्मक मानसाराधन कर

स्वात्मसस्थमजं

हे परमेश्वर! अज, शुद्ध तथा मेरी आत्मा में उपस्थित तुम्हे "आरणि" में अग्निहोत्र के समान आज इस मूर्ति में आवाहन करता हूं।

सान्निध्य प्रार्थनम्

सभी कामनाओ को पूर्ण करनेवाले हे देवाधि-देव! द्रव्य, मत्र कर्म तथा भक्ति से संतुष्ट होकर इस मूर्ति में विराजित करें।

आसनम्

आराधन मत्र को बताकर पुष्प को समर्पित करना चाहिए।

हे परमेश्वर! सर्वांतर्यामी तथा मेरी आत्मा में विराजमान तुम्हारे लिए सर्व बीजमय, शुभ-प्रद, उत्कृष्ट तथा शुद्ध आसन ससिद्ध करता हूँ।

सर्वांतर्यामिणे देव! सर्वबीजमय शुभम्।
स्वात्मसा य वर शुद्धमासनम् कल्पयाम्यहम्॥

पाद्य

पाद्यमंत्र का जपकर स्वामी के पादो मे उदक रखकर, उस जल को तीर्थपात्रा में लेना चाहिए।

यद्भक्ति लेश सपर्कात् परमानद सभवः ।
तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्य शुद्धाय कल्पये ।।

जिन के प्रति लेश भक्तिमात्र से ही परमानंद की प्राप्ति होती है, ऐसे परमेश्वर के शुद्ध पादपद्मों को पाद्य समर्पित करता हूँ ।

अर्घ्य

अर्घ्यमंत्र का उच्चरण कर स्वामी के हाथो में उदक को दिखाकर तीर्थपात्र मे रखना चाहिए ।
त्रितापहारक, परमानद स्वरूप, तापत्रय विनिर्मुक्तवाले अर्घ्य को मै तुम्हे समर्पित करता हूँ ।

आचमन

आचमन मत्र को उच्चरणकर स्वामी के मुख की ओर उदक दिखाकर तीर्थपात्र में जलधारण करना चाहिए ।

हे परमेश्वर! वेदो के वेद, देवताओ केलिए देव, शुद्धो केलिए शुद्धि हेतुस्वरूपवाले तुम्हारे लिए आचमन को समर्पित करता हूँ ।

वेदानामपि वेदाय देवाना देवतात्मने ।
आचाम कल्पयाम्यद्य शुद्धाना शुद्धिहेतवे ।।

स्नानम्

स्नान मंत्र को बताकर स्वामीजी को पचामृत तथा उदक से स्नान करवाकर उस जल को तीर्थपात्र मे रखना चाहिए ।

हे परमेश्वर! "परमानदबोध" नामक सागर में विराजित होनेवाले, स्वस्वरूप तुम्हारे लिए इस स्नान को सपन्न कराता हूँ ।

"परमानन्दबोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये ।
सागोपागमिद स्नान कल्पयाताम्यद्य ते पुनः ।।"

वस्त्र

वस्त्र मत्र को पढकर स्वामी को वस्त्रद्वय साक्षत समर्पित करना चाहिए ।

हे अपार विज्ञान! माया चित्र पट से ओढे तथा गूह्योतेज सहित तुम्हारे लिए मै वस्त्र समर्पित करता हूँ ।

"मायाचित्रपटाच्छन्न निजगुह्योरु तेजसे ।
निरावरण विज्ञान वस्त्र ते कल्पयाम्यहम् ।।"

उत्तरीय

उत्तरीय को दिखाकर भगवान को उत्तरीय (साक्षत) समर्पित करना चाहिए ।

हमेशा जिन के आश्रय में ससार को मोहित करनेवाली माया रहती है, ऐसे परमेश्वर तुम्हें मै उत्तरीय समर्पित करता हूँ ।

तिलक

तिलक मंत्र को बताकर स्वामी को तिलक समर्पित करना चाहिए ।

हे जगन्नाथ! तुम सब देवताओ केलिए तिलकप्राय हो । ऐसे तुम्हे मै दिव्य तिलक समर्पित करता हूँ । कृपया स्वीकार कीजिए ।

यज्ञोपवीत

यज्ञोपवीत मत्र से स्वामी को यज्ञोपवीत (साक्षत) समर्पित करना चाहिए ।

"यस्य शक्ति त्रयेणेद संप्रोतमखिल जगत् ।
यज्ञसूत्राय तस्मै ते यज्ञसूत्र प्रकल्पये ।"

जिनके शक्तित्रय (इच्छा, ज्ञान, क्रिया) से यह समस्त जगत सप्रोत है, ऐसे यज्ञसूक्ति तुम्हारे लिए यज्ञसूत्र समर्पित करता हूँ ।

चन्दन

चन्दन मत्र से स्वामी को समर्पित करना चाहिए ।

'परमानन्द सौरभ्य परिपूर्ण दिगतरम् ।
गृहाण! परम गन्ध कृपया परमेश्वर ।।"

हे परमेश्वर! उसका परमानंद देनेवाला सुगन्ध समस्त उनमें व्याप्त है । ऐसे इस उत्कृष्ट गन्ध को कृपया स्वीकृत कीजिए ।

पुष्प

पुष्पमत्र से स्वामी को पुष्प समर्पित करे ।
मोक्ष वन मे उद्भूत विविध मनोहर वर्णो से युक्त आनदरूपी सुगन्ध से परिपूर्ण तथा श्रेष्ठ इन पुष्पो को स्वीकृत कीजिए ।

आभरण

आभरण मंत्र से स्वामी को आभरण [साक्षत] समर्पित करना चाहिए ।

तिरुमल पर भगवान बालाजी के मन्दिर मे अर्चक के द्वारा स्वामी जी के प्रसाद स्वीकार करते हुए मुख्यमत्री महोदय ।

देवताओ से पूजित हे स्वामी! सहज सुन्दर शरीरवाले, विविध शक्तियो के आश्रयदाता, तुम्हारे लिए विचित्र श्रृगार वस्तुओ को समर्पित करता हूँ।

धूप

धूप मत्र से स्वामी को धूप चढावे।

वनस्पतियो के सार से सपर्क उत्तम सुगन्ध वाले तथा देवताओ केलिए आघ्राणयोग्य इस धूप को स्वीकार कीजिए।

दीप

दीप मत्र से दीप जलाकर स्वामी को दीप दिखावे।

अधिक प्रकाशवाले, 'महादीप' नाम से विख्यात सब जगह अधकार को नाश करनेवाले अन्तर तथा बाह्य ज्योति स्वरूप वाले इस दीप को ग्रहण कीजिए।

"धूप दीप के समर्पित करने के बाद आचमनीय को समर्पित करता हूँ" ऐसा कहकर पहले बताये गये विधि की तरह समर्पित करना चाहिये।

मधु पर्क

मधु पर्क मत्र से स्वामी को मधु पर्क समर्पित करना चाहिए।

हे परमेश्वर! सर्वकलुषहीन तुम्हारे लिए परिपूर्ण तथा सुखात्मक इस मधुपर्क को समर्पित करता हूँ। सतुष्ट हो जाइये।

नैवेद्य (भोग)

भोग लगानेवाले पदार्थ को स्वामी के पास रखकर इष्ट देवता मूल मत्र से प्रोक्षण कर, उसके चारो ओर पानी छोडकर, पूर्वापोशन देकर उस के बाद नैवेद्य मत्रो से उसे स्वामी को समर्पित करना चाहिए।

भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य पदार्थों सहित चार प्रकार के चावल, मीठा, कडुआ, खारा, मिर्चो इत्यादि षड्रस सहित पदार्थ भोग के रूप में स्वीकृत कीजिए।

निम्न लिखित पाच मत्रो से भगवान को भोग लगाना चाहिए।

१ प्राण केलिए नमस्कार
२ अपान ,, ,,
३ व्यान ,, ,,
४ उदान ,, ,,
५ समान ,, ,,

बीच बीच मे जल को समर्पित करना चाहिए। शुद्धाचमन को समर्पित करना चाहिए।

तांबूल

ताबूल मत्र से स्वामी को ताबूल समर्पित करना चाहिए।

पूगीफलैस्सकर्पूरैर्नागवल्लीदलर्युतम्।
मुक्ताचूर्णसमायुक्त ताबूलम् प्रतिगृह्यताम्॥

पूगीफल, कर्पूर, मुक्ताचूर्ण, नागवल्लीदल सहित ताबूल को ग्रहण कीजिए।

नीराजन

नीराजन मत्र से आरता करनी चाहिए। चन्द्र, सूर्य, भूमि, बिजली अग्नि इत्यादि सर्व ज्योति स्वरूप तुम आरती को स्वीकार करो।

नीराजन के बाद शुद्धाचमन को समर्पित करने चाहिए।

मंत्र पुष्प

मत्रपुष्प से स्वामी को पुष्पाजिलि समर्पित करना चाहिए।

श्रुति, स्मृति तथा दिव्य लौकिक वचनो से मत्रित पुष्पो से मत्रपुष्प को समर्पित करता हूँ।

फलसमर्पण

स्वामी को मत्र सहित अर्चना फल समर्पित करना चाहिए।

हे परमेश्वर! मुझ से यह फल तुम्हारे सामने रखा गया। उससे अनेक जन्मो का मेरा जीवन सफल होवे।

चराचरात्मक त्रिलोको में फल प्रदान से सब फलदायी होता है। मेरी सभी इच्छाए सफल हो।

पुष्पाञ्जलि

पुष्पाञ्जलि मत्र से स्वामी को पुष्पाञ्जलि समर्पित करना चाहिए।

पुण्डरीकाक्ष को नमस्कार है। अमर प्रिय को नमस्कार है। कमलाकान्त को नमस्कार है। वासुदेव को नमस्कार है।

आत्मप्रदक्षिणा

अक्षत लेकर प्रदक्षिणा मंत्र का जप करते हुए आत्म प्रदक्षिण करना चाहिए।

न जाने जन्मजन्मातरो मे कितने ही पाप किये थे, वे सब पाप प्रदक्षिणा करने से पग पग में नाश होते है।

हे परमेश्वर! शरणागतवत्सल! मै पापी हूँ पापकर्मी, पापात्मा हूँ, पापकर्मो से जन्म लिया हूँ। कृपामय होकर मेरी रक्षा करो। मुझे और कोई सहारा नहीं है। तुम्हीं मेरी एकमात्र आधार है। अतएव हे जनार्दन दया से मेरी रक्षा करो।

स्वामी के पादो मे अक्षत रखना चाहिए। नमस्कार करते हुए क्षमा की प्रार्थना करनी चाहिए। हे पुरुषोत्तम! उपचारो के बहाने मैने प्रतिदिन जो अपचार किये, उन्हे क्षमा कीजिए।

हे परमेश्वर! यह पूजा मत्रहीन, क्रियाहीन तथा भक्तिहीन है। ऐसी यह पूजा तुम्हारे परिपूर्ण अनुग्रह से परिपूर्ण हो।

इस षोडशोपचार पूजा से .. स्वामी, प्रीतिपात्र, प्रसन्न तथा वरद हो जायें।

तीर्थप्राशन

तीर्थपात्र के चरणामृत से प्रसन्न चित्त से तीन बार तीर्थमत्र से स्वीकार करना चाहिए।

अकालमृत्युहारक, सर्वव्याधि निरोधक समस्त पाप नाशक, पवित्र तथा शुभप्रद वाले स्वामी के चरणामृत को स्वीकार करना चाहिए।

विशेषोपचार

इन उपचारो को उपर्युक्त मत्रो से सपन्न करना चाहिए।

१ छत्र को समर्पित करता हूँ।
२ चामर को समर्पित करता हूँ।
३. नृत्य को प्रदर्शित करता हूँ।
४ गान को सुनाता हूँ।
५ मंगल वाद्य को बजाता हूँ।
६. समस्त राजोपचारो को समर्पित करता हूँ।

(क्रमशः)

तिरुमल-तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

कोइल आलवार तिरुमंजनम्

आगम शास्त्रों ने देवस्थलो मे पवित्रता की आवश्यकता तथा वैशिष्ट्य का विशेष उल्लेख किया है। मदिर के अन्दर प्रवेश करने के पहले स्नान करना, पादरक्षाओ को छोडना इत्यादि कुछ नियम इसी पवित्रता को बनाये रखने केलिए ही निर्णीत किये गये हैं। मदिर के अहाते में ही नही बल्कि गर्भगृह में भी आगम शास्त्र के अनुसार एक पवित्र तथा आरोग्यदायक कार्यक्रम सपन्न होता है जो कोइल आलवार तिरुमजनम् के नाम से अभिहित है।

इस सेवा विधान में सभी मूर्तियाँ तथा अन्य वस्तुएँ दीपों सहित गर्भगृह से बाहर लायी जाती हैं। और मूलमूर्ति को पानी अदर नहीं आनेवाले आच्छादन (water proof covering) से अच्छादित किया जाता है। उस के बाद पूरा गर्भ-गृह, दीवार, जमीन तथा ऊपरी भाग अधिक गरम पानी से खूब साफ किया जाता है। तदनतर सर्वत्र कुकुम, कर्पूर, चदन, हल्दी इत्यादि से लेप किया जाता है। फिर मूलमूर्ति से अच्छादन हटाकर मूर्तियाँ, दीप और अन्य चीजों को गर्भ-गृह के अन्दर रखाया जाता है। मूलमूर्ति को पवित्र पूजाएँ समर्पित की जाती है और भोग लगाया जाता है।

यह पवित्र कार्यक्रम वर्ष में केवल चार बार मनाया जाता है- (१) युगादि के पूर्व (तेलुगु नूतन वर्ष), (२) मिथुन कटक सक्रमण के दिन (आणिवारि आस्थानम्) के पूर्व, (३) दिवाली के पूर्व (४) वार्षिक ब्रह्मोत्सव के पूर्व।

इस सेवा को मनाने केलिए सेवा की दर रु १,७४५/- है। १० लोगो को प्रवेश मिलेगा। कार्यक्रम के अत मे गृहस्थ को बडा, पापड, दोसै इत्यादि प्रसाद भी प्राप्त होगे। यह सेवा दैनिक पूजा कार्यक्रम के बाद प्रात ८ बजे सपन्न होती है। उस दिन भगवान का दर्शन दोपहर ३ बजे से चालू होगा।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति. ति देवस्थान, तिरुपति.

कब्रिस्तान का एक उपाख्यान

(मानव सृष्टि का सर्वोच्च प्राणी समझा जाता है। किन्तु, मानव मे इतर बहुत से ऐसे जानवर हैं, जिनकी ग्राह्य-क्षमता मनुष्य की क्षमता से अति सूक्ष्म एवं तीव्र होती है। कुत्ते की घ्राण-क्षमता इतनी तीव्र होती है कि वह सूँघ कर किसी भी अज्ञात-तथ्य का पता लगा लेता है। किन्तु, प्रज्ञायुक्त होते हुए भी साधारण मनुष्य के पास उस शक्ति का अभाव है। उसी प्रकार कोई मनुष्य अलौकिक-शक्ति सम्पन्न हो सकता है और साधारण मनुष्य की दृष्टि के परे की वस्तुओ को भी देख सकता है। यही दिव्य-दृष्टि का रहस्य है। यह कोरी कल्पना नही है, वस्तुतः सत्य है। यहाँ एक ऐसे ही महात्मा का चित्रण है जिन्हें दिव्य-दृष्टि प्राप्त है। — अनुवादक)

महान योगी जस्टीन मोरवार्ड हेग (Justine Moreward Hague) प्रातः भ्रम-

साहित्यरत्न श्री अर्जुनशरण प्रसाद, एम ए.,
चक्रधरपुर.

णार्थ निकल पडे। भ्रमणक्रम मे वह एक कब्रगाह की ओर मुड गये, जहाँ पहले से ही कुछ आदमी आलाप में सलग्न थे। उनके वहाँ पहुँचने तक सभी प्रायः चलने को तत्पर हो चुके थे और कुछ क्षणोपरान्त कब्रगाह प्रायः जनकीर्ण हो चुका था। विभिन्न कब्रो के शिलालेखों पर एक सरसरी निगाह डालते हुए वे चले जा रहे थे। सहसा उनकी निगाह एक लडकी पर पडी जो एक नई कब्र पर फूल चढा रही थी। वह इतनी दुःखी प्रतीत होती थी कि जस्टीन मोरवार्ड हेग, जिन्हें सक्षेप में 'एम० एच०' कहना ही सरल होगा, उस सरल-हृदया बालिका से सान्त्वना के दो शब्द कहे बिना नही रह सके। वे उसके नजदीक गए और उन्होंने उस लडकी के कन्धे पर हाथ रख दिया।

"मेरी बच्ची", उन्होंने अपनी आवाज की सारी कोमलता मे कहा। "अपने पिता के लिए तुम उस प्रकार दुःखी मत होओ। तुम्हारे पिता उस कब्र मे नही हैं। वे तो तुम्हारे बगल में खडे है और तुमसे कह रहे हैं कि उन्होंने कभी भी तुम्हें नही छोडा है।"

लड़की एम० एच० के उन शब्दों को पूरी तरह समझने में असमर्थ थी। उसने एम० एच० का हाथ पकड लिया और पूछा

"आप मेरे पिता को जानते हैं?"

"नहीं, मेरी बच्ची।"

"तब मै समझ नही पाती हूँ। मैंने आपको कभी नहीं देखा है। आप मेरे पिता को कैसे जानते हैं?" बालिका ने अपना हाथ एम० एच० के हाथ से छुडा लिया।

"चूँकि मै उनकी जीवात्मा को यहाँ और अभी देख रहा हूँ और उनको कहते हुए सुन रहा हूँ — "उससे कहो कि वह इस प्रकार शोकाभिभूत न होवे — और न रोये मै उसका पिता हूँ—उसको समझने में सहायता दें कि मै ने उसे कभी नही छोडा है।"

वह घूम गयी और उसने अपना सिर एक ओर लटका लिया। वह किंकर्त्तव्यविमूढ हो चुकी थी, किन्तु वह रोयी नही। एम० एच० ने अपनी बाहें उसके गले में डाल दीं।

"आओ, मेरी बच्ची" उन्होंने बडी ही मधुर आवाज मे कहा, "मै यही तुम्हें सान्त्वना दूँगा। क्या तुम नही सुनोगी?"

लडकी ने स्वीकारात्मक सिर हिलाया। महात्मा ने क्षीण आवाज में कहा: "हम लोगों में से कुछ उन्हे देख सकते हैं, जिन्हें लोग मृत कहते हैं। क्यों कि सचमुच में

कोई भ्रम नही है। मै जानता हूँ कि तुम्हें इस पर विश्वास करना कठिन प्रतीत होगा, किन्तु यही सत्य है। क्या मै तुम्हें विश्वास दिलाने के लिए बताऊँ कि तुम्हारे पिता कैसे हैं ?"

लडकी ने जवाब नहीं दिया, किन्तु उसने इस प्रकार का भाव प्रकट किया मानो वह जानना चाहती है।

"वह अभी जवान हैं, मात्र करीब अडतीस वर्ष के, साफ दाढी बनाए हुए, लम्बे और इस प्रकार का . . "

वह अचानक सुबकने लगी।

"यह, यह मेरी बच्ची क्या कर रही हो। ऐसा मत करो -- मै तुम्हारी पीडा को समझता हूँ, पर ऐसा मत करो।"

"क्या तुम जानना चाहती हो कि मै क्या कहने जा रहा हूँ?"

"वह यह है कि तुम्हारे पिता बहुत ही प्रसन्न होते, अगर तुम उन्हें चोट न पहुँचाती, जैसा तुम सोच कर कर रही हो।"

"यह बहुत ही कठिन है" — वह सुबकने लगी।

"तुम दोनो पिता-पुत्री की अपेक्षा मित्रवत् ज्यादा थे। क्या वैसा नही था?"— उन्होंने वार्तालाप के रूप में कहा, जिससे पता चलता था कि वे उसके ध्यान को दूसरी-दिशा में मोडने का प्रयास कर रहे हैं।

"अगर हममें से कुछ के लिए यह सम्भव न होता कि उन्हे देख सके, जो अपने शरीर छोड चुके है तो मै कैसे तुन्हे इतनी सारी बातें बता देता? क्या ऐसा सम्भव होता? इसलिए तुम देखती हो कि हमारे प्रियजन, जो मर गये हैं और हमसे बहुत दूर चले गए हैं अथवा अब उनका अस्तित्व नही रहा, परन्तु ये बातें सच्ची नही हैं, वे सब समय हमारे साथ हैं। केवल हम उन्हें देखने में तथा सुनने में जो वे कहते हैं असमर्थ हैं।"

अब तक उसने सुबकना बन्द कर दिया था।

"आप एक दिलचस्प आदमी हैं", उसने इस प्रकार कहा कि एम० एच० के साथ आयी हुई उनकी एक अन्य शिष्या क्लेयर ने रूमाल उस बालिका की आँखों पर रख दिया।

एम० एच० मुस्कराये। "यह अच्छा रहा"—उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक कहा और अब मेरी बच्ची, तुम्हारे पिता तुम्हें एक सन्देश देना चाहते हैं — ओफ-और तुम्हारी माँ भी। तुम्हें मुश्किल से उनकी याद होगी। क्या तुम्हे याद है? वे उससमय मर गयी थी, जब तुम बहुत छोटी थी।"

"अच्छा! अब मैं शब्दशः पुनरावृत्ति करता हूँ जो मै तुम्हारे पिता को कहते हुए सुनता हूँ :—

कहो . मेरी . छोटी .... बच्ची को ··· मैं ··· वहाँ उस . कब्र में . . नही .... हूँ .... परन्तु .... मै उस ... जगह पर उस की .. अम्मा के .. साथ हूँ उसे ... कहो ... कि वह . . . उस जगह पर फिर ... कभी . न आये . . . यह . . उसे .... बहुत दुःख देता . है क्यों कि . . वह . . . पीडित .... एव . . दुःखित होती .... है ... उसे कहो .... कि ... वह . ध्यान .... दे .... जो .... श्रीमती . हौज .. कहती है . . वह .... उन्हें . . . सहायता भी . . दे सकती .... है मै .... बहुत

राजमन्नारगुडि स्थित श्रीराजगोपाल स्वामी का मन्दिर दृश्य
फोटो : वी. एस. श्रीनिवासन्, तजाऊर
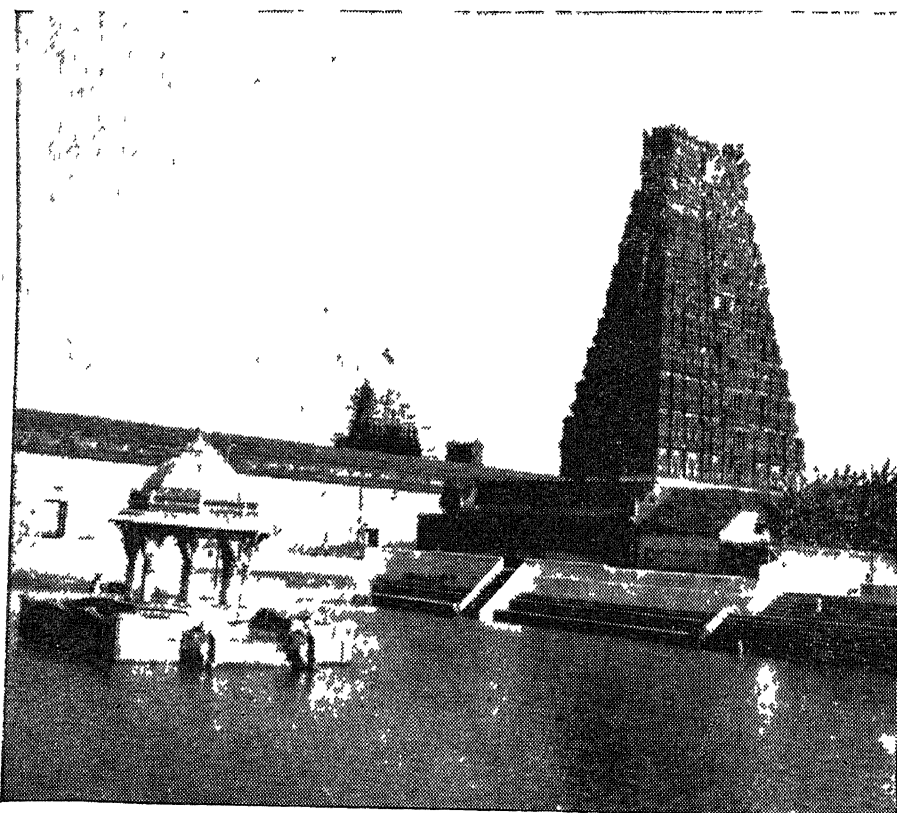
. कृतज्ञ . . होऊँगा ... अगर .... वह छोटी . सुन्दर ... महिला .. जो .. आप . . . के ... साथ है अपनी मित्रता मेरी छोटी . बच्ची ... के साथ ... कायम करे मै . ने .. उसके विचार .... को पा लिया है और . . जानता .... हूँ वह हमें .. देख . सकती . . है .... मा मा .... और मै .. अधिक प्यार ... भेज . सकते . . हैं .... और अपनी ... छोटी . .. बच्ची से आग्रह ... करते . .. हैं कि ... मेरे .... प्यार . .. के . . खातिर ... शोक ... नही . . करे और मै ... अब . आपको ... धन्यवाद . देता हूँ . महाशय .. जो .... सेवा .... आप .... ने ... मेरे . .. लिए ... की हम .... दोनों .... आप . के प्रति ... कृतज्ञ . हैं .... हम .. दोनों .... आप के प्रति कृतज्ञ .. है . कहो . मेरी .... छोटी .... बच्ची ... को . . कि .... यह ... एक बहुत . . ही सुन्दर . . जगह ... है किन्तु . हमलोग ..उसके .. सब समय .... करीब .... हैं .. समझी . यद्यपि . मै अनुमान .... करता हूँ कि . यह . उस .... के लिए . . कठिन .... प्रतीत होगा . किन्तु आप का . . दोस्त .. उसे समझा देगा . . उसे . घर जाने . के लिए .... मना लीजिए . और . एक . बार . अब ....फिर धन्यवाद ।"

"यही वह संवाद है, मेरी बच्ची! इस तरह तुम देखती हो कि वह इतनी भयानक जगह नहीं है जितना तुम समझती हो।" बालिका मौन रही।

एम० एच० ने फिर आगे कहा--

"मृतकों की दुनियॉ कोई अनोखी दुनियॉ नही है। हम लोग प्रत्येक रात को मरते हैं। इसीलिए निद्रा को मृत्यु का जुडवॉं भाई कहा गया है। फर्क केवल यही है कि निद्रा में सूक्ष्म-शरीर एवं स्थूल-शरीर एक सूक्ष्म-तन्तु (Silver-Cord) रजत-रज्जु से जुडा रहता है, और मृत्यु में इस रजत-रज्जु का सम्बन्ध स्थूल-शरीर से टूट जाता है, जिससे स्थूल-शरीर मृतिका मात्र रह जाता है और आत्मा सूक्ष्म-शरीर में अपनी आशा-आकांक्षाओं के अनुरूप विचरती रहती है। संक्षेप में जीवित एव मृतक में यही फर्क है।"

बालिका अब तक बहुत अशों में आश्वस्त हो चुकी थी, यद्यपि वह थिआँसोफी के तथ्यों को पूर्ण रूप से ग्रहण करने में अपने को असमर्थ पा रही थी। इस तरह उन दोनों में वार्तालाप का क्रम समाप्त हुआ।

एम० एच० और उनकी शिष्या ग्लेचर ने बालिका को अपने यहाँ आने को आमंत्रित किया। बालिका ने स्वीकारात्मक सिर हिलाया और वे एक दूसरे से बिदा हुए।

योगी किस उद्देश्य से कौन-सा कार्यक्रम बनाते हैं — यह साधारण व्यक्ति की समझ से परे होता है।

इस भ्रमण में एम० एच० का उद्देश्य उस संतप्त-बालिका को सान्त्वना प्रदान करना एवं उसे थिआसोफी के गूढ तत्वों से अवगत करा कर उसके सस्कार में थिओसाफिकल बीज-वपन करना ही लक्ष्य था। *

(पृष्ठ ७ का शेष)

पातंजल योगशास्त्र में साधक के शरीर में कभी कभी गर्मी उत्पन्न हो जाती है, शरीर में चुन चुनाहट या खुजलाहट हो जाती है। गर्मी या ठंडक का आभास मिलता है।

आणुविक प्रयोग में तो यह आम बात है। न्यूक्लीअर प्रयोग (atomic physics) के जरिए आप का दूर से प्रभावित किया जायेगा और आप गर्मी या ठंडक महसूस करने लगेंगे। शरीर में चुनचुनाहट खुजलाहट होने लगेगी एवं सारा शरीर जलने लगेगा।

सुना (Artificial) बनावटी अनहदनाद सुना देना तो आम बात है। कोई चीज हवा उडती हुई सन से आपके कान में आ लगेगी और आपको आवाज सुनाई देने लगेगी। वह आवाज आपको वर्षो तक पीछा करती रहेगी।

आपके सारे शरीर को आणुविक विकिरणों से भर दिया जायेगा। दूसरा प्रयोग किया जायेगा। अपके पैरों के अगूठे से सारे अणु-कण सन सन कर खींचे लिए जायेंगे।

आपके कमरे को आणुविक न्यूक्लीअर गैस से भर दिया जायगा। दूसरा प्रयोग किया जायेगा। जुगुनु जैसे आठ दस अणु कण चमचमाते हुए आयेंगे। सारे आणुविक गैस पीकर वे स्वत: बुझ जायेंगे।

इसतरह आजका जीवन सुखशांति पूर्ण नहीं रह गया है। मनुष्य स्वत: अपने लिए आप ही खतरा तथा आशंका पैदा करता जा रहा है और इस पृथ्वी जैसे छोटेग्रह को मृतप्राय बनाता जा रहा है। फर्क यही है कि पहले लोग इन विद्याओं का प्रयोग अपनी इच्छा शक्ति (will force) से करते थे जिसमें उनका उद्देश्य मानव की भलाई सन्निहित थी। किन्तु, उन विद्याओं का प्रयोग न्यूक्लीय अविष्कारों से मशीन द्वारा किया जा रहा है और उसका उद्देश्य आज केवल मानव को सताना तथा उसे विनाश के कगार पर पहुँचाना रह गया है। *
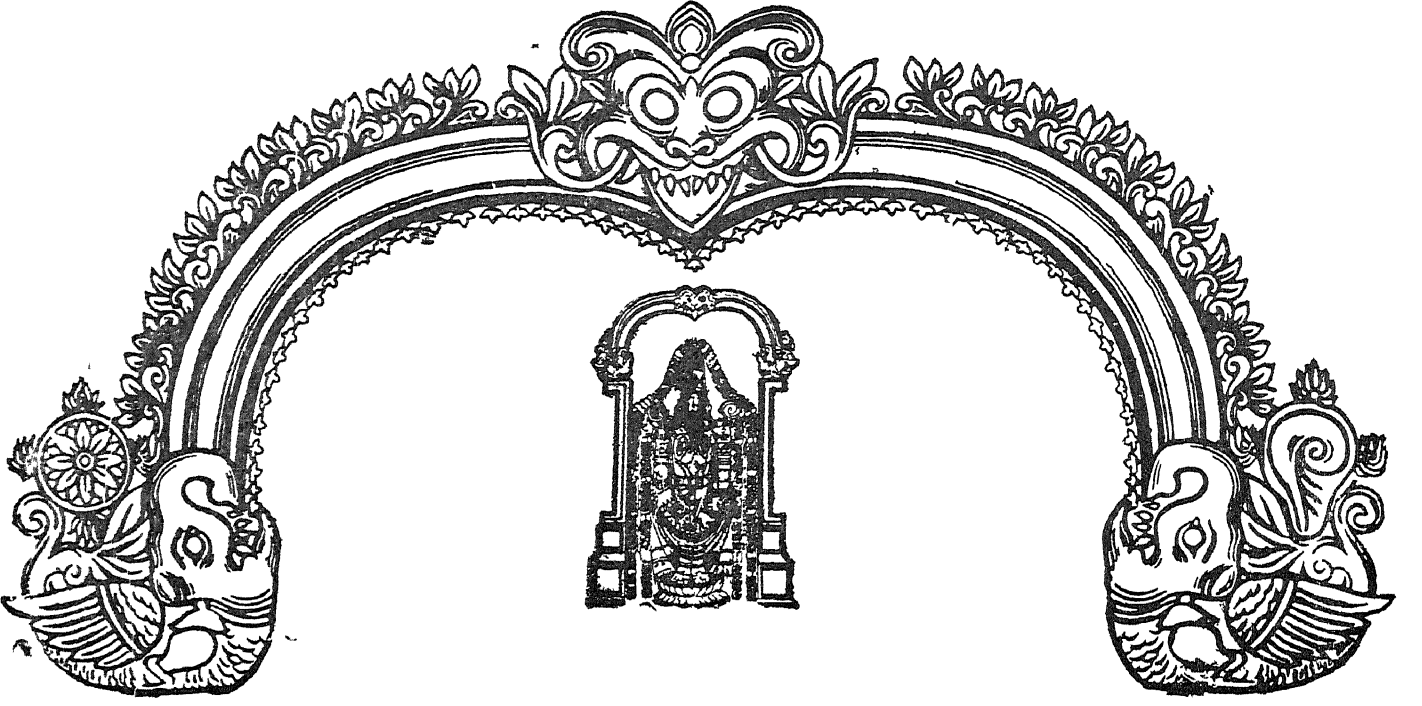
तिरुमल तथा तिरुपति यात्रा की यातायात - सुविधाएँ

भारत के किसी भी रेल्वे स्टेशन से तिरुमल तक रेल के सीधे टिकेट खरीदे जा सकते हैं। तिरुपति तक सीधी रेलगाडियों का प्रबंध भी है। जैसे कि मद्रास से (सप्तगिरि एक्सप्रेस, बडी लाइन), विजयवाडा से (तिरुमल एक्सप्रेस, बडी लाइन), काकिनाड़ा से (पेसंजर गाडी बडी लाइन), हैदराबाद से (वेंकटाद्रि एक्सप्रेस, छोटी लाइन और रायलसीमा एक्सप्रेस, बडी लाइन), तिरुचिनापल्लि से (फास्ट प्रेसंजर गाडी, छोटी लाइन) पाकाला, काट्पाडि, रेणिगुण्टा तथा गूडूर जैसे रेल्वे जंक्शनों से तिरुपति तक सुविधाजनक मिली जुली रेलों का प्रबंध है। भारत के किसी भी रेल्वे स्टेशन तक जाने केलिए तिरुमल से ही वापसी यात्रा का टिकेट भी खरीद सकते हैं।

मद्रास तथा हैदराबाद से तिरुपति तक नियमित विमान सेवा का प्रबंध है और हवाई अड्डे से उन यात्रियों को तिरुमल तक ले जाकर फिर वापस लाने केलिए एक विशेष बस का प्रबध भी है। सुदूर प्रदेशों से रेल या बस से आनेवाले यात्रियों को तिरुमल पहुँचाने केलिए लिंक बसों का भी प्रबंध है। प्रातः काल से लेकर रात देर तक तिरुपति-तिरुमल के बीच हर ३ मिनट पर लगातार चलनेवाली बसों का प्रबध है। ए. पी. एस. आर. टी. सी. शाखा द्वारा तिरुपति - तिरुमल के बीच कान्ट्राक्ट कारेज बसों का प्रबध भी है। इस में एक ट्रिप केलिए रु. १३५ देकर ४५ यात्री जा सकते हैं। तिरुपति से तिरुमल तक पैदल दो रास्ते भी हैं जो भव्य सुदर सात पहाडियों से होते हुए हैं। अनेक यात्रीगण अपनी मनौती के रूप में पैदल रास्ते से आनंद उठाते जाते है।

तिरुपति से तिरुमल तक दो घाटी रोड हैं जिन में से एक तिरुमल जाने केलिए द्वितीय तिरुमल से लौटने केलिए हैं।

व्यक्तिगत कारों के लिए भी तिरुमल पर जाने की अनुमति है। यहाँ पर टेक्सियाँ भी मिलती हैं।

कार्यनिर्वहणाधिकारी,

ति. ति. देवस्थान, तिरुपति.

श्री अन्नमाचार्य तथा श्री त्यागराज के संगीतोत्सव

दि २५–३–७९ से १–४–७९ तक अन्नमाचार्य कलामंदिर में पदकविता पितामह श्री ताल्लपाक अन्नमाचार्य जी के वर्धन्ति तथा श्री त्यागराज स्वामीजी के आराधना-सगीतोत्सव हुए थे। इसमें दि. २५ से २८ तक अन्नमाचार्य के वर्द्धन्ति कार्यक्रम, बाद को सगीतोत्सव अतिवैभव से मनाये गये। इतने दिनो का बडा कार्यक्रम चलाना इस वर्ष की प्रशंसनीय बात है।

देवस्थान के कार्यालय से दि. २५–३–७९ के सुबह ही श्री अन्नमाचार्य जी के चित्र को लेकर जुलूस निकला। वही से अन्नमाचार्य कलामंदिर तक लाया गया। तभी से इस कार्यक्रम का शुरु आत हुआ। उसी दिन के शाम के सभा के अध्यक्ष, श्री एम शान्तप्पाजी, विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने अन्नमाचार्य जी की कीर्तनाओ का २६ वी संपुटि को उद्घाटन किया। तथा उसके साहित्य पर विश्वविद्यालय में अध्ययन-केंद्र खोलने की आवश्यकता को बताया।

देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी. वी. आर के. प्रसादजी अपने भाषण में बताया कि उसके साहित्य को छपवाने का तथा प्रचार करने के लिए दो अलग विभाग रखकर, उसके लिए विशेषाधिकारियोको नियुक्त करना चाहिए तथा औंत्साहिक व्यक्तियो को शिक्षित करके, उनसे गाने की इन्तजाम करवाना तथा ग्रामफोन रिकार्ड द्वारा खूब प्रचार कराना चाहिए। उन के जन्मस्थल ताल्लपाक ग्राम को देवस्थान दत्तक ग्रहण ले रहा है। उनके साहित्य के प्रचार के लिए देवस्थान पूरा कोशिश कर रहा है।

सभा के मुख्यातिथि, डा० बि रामराजुजी, विश्वविद्यालय के तेलुगु विभागाध्यक्ष अपने भाषण मे कहा कि पूरे जानपद साहित्य के सभी सम्प्रदाय उनकी कीर्तनाओ में गोचर हो रहा है। रामायण, महाभारत तथा अन्नमाचार्यजी के साहित्य का अध्ययन करने से और कुछ पढने की भी जरूरत न होगी। इतने महान साहित्य-विश्व सृष्टा के जन्म स्थल को सुदर तिरवायूर जैसे पवित्र यात्रा स्थल बनाना चाहिए।

ति ति. न्यास मण्डल के सदस्य श्री चंद्रशेखर नायुडुजी ने अन्नमाचार्य के वशजो को तथा उनकी कीर्तनाओ के अध्येता तथा प्रचारक व्यक्तियों को सम्मानित किया।

सभा के प्रारभ में अन्नमाचार्य प्राजेक्ट के विशेषाधिकारी श्री कामिसेट्टि श्रीनिवासुल, सेट्टिजी तथा सगीत नृत्य कलाशाला के अध्यक्ष श्री डी पशुपतिजी वार्षिक निवेदिका समर्पित की।

उसके बाद मधुर संगीत कार्यक्रम सम्पन्न हुए, शेष विवरण अगले सचिका में।

गोविंदराज स्वमी ब्रह्मोत्सव:—

तिरुपति तथा तिरुचानूर के मंदिरो मे श्री गोविंदराज स्वामीजी के मदिर का राजगोपुर भक्त जनो को भौतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से भगवान की कृपा-पात्र होने के लिए पुकारते हुआ जैसा प्रतीत होता है। इस भगवान के दर्शन किये बिना जानेवाले यात्री बहुत कम ही होगे।

हर साल मनाये जानेवाले ब्रह्मोत्सव कार्यक्रम वेदो में बतायेनुसार शास्त्रयुक्त पद्धति से ३१–५–७९ से १–६–७९ तक अतिवैभव से मनायी जाती है। अगणित भक्त जनो को आकर्षित करनेवाली रथोत्सव जून ८ वी तारीख को होगा।

ब्रह्मोत्सव के आखरी कार्यक्रम अवबृथोत्सव ता० ९–६–७९ को होगा। श्रीमन्नारायणजी का अवतार ही श्री गोविंदराज स्वामी हैं। शयन मुद्रा में रही स्वामीजी के नाभि से उद्भव कमल में ब्रह्मा के चरणो पर मधुकैटभ भी है। ब्रह्मोत्सव के अवसर पर भगवान का दर्शन अत्यत शुभप्रद है।

नूतन टेलिफोन भवन कानिर्माण:—

ति. ति देवस्थान से निर्मित किये जानेवाले डाक और तार विभाग के नये भवन को दि० २५–३–७९ को श्री जे. ए दवेजी आई.ए एस. ने नीव डाले। देवस्थान के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी वी. आर के. प्रसाद जी तथा अन्य प्रमुख लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुआ। श्री दवें जी ने अपने भाषण में कहा कि २ अप्रैल से रात में काम करनेवाले डाक विभाग खोलने का निर्णय लिया गया। जिस से कि सभी लोगों की सुविधा हो। इस सभा के अध्यक्ष श्री. पी. वी आर के प्रसादजी आइ ए. एस ने कहा कि इस भवन का निर्माण एक साल में पूरा करके डाक विभाग को भाडे के लिए दिया जायगा। सर्वश्री पोस्ट मास्टर जनरल श्री पाल राजन, देवस्थान के उपकार्य निर्वहणाधिकारी श्री मुनुस्वामि नायुडु जी, श्री नरसिंहरावजी तथा टेलिकम्यूनिकेषन्स् के जनरल मेनेजर श्री हनुमान चौधरी जी भी भाषण दियें।

(शेष पृष्ठ ४० पर)

श्री एस. वी. यूनिवर्सिटी का वाल बाटमेन्टन विजेताओं को ति. ति. देवस्थान के रोलिंग ट्राफी प्रदान करती हुई श्रीमति गोपिका प्रसाद
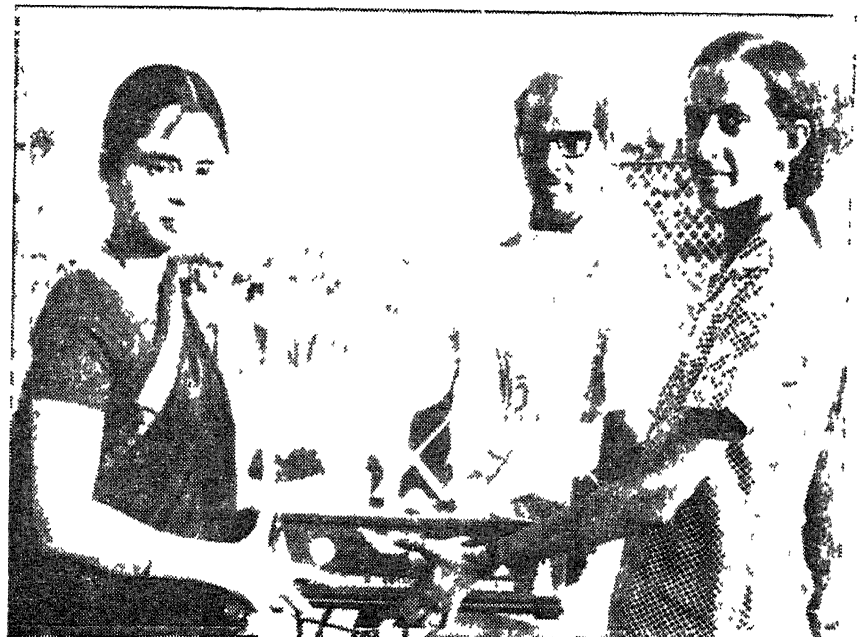
ति. ति. दे. के न्यास मण्डल के प्रमुख निर्णय

देवस्थान के पांचरात्रागम विद्वान पद को समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर भर्ती कराने का निर्णय लिया गया।

देवस्थान के उत्सव सलाह कमेटी का निम्नलिखित सदस्यों से पुनः व्यवस्था किया गया। सर्वश्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, तीनों उपकार्य निर्वहणाधिकरियों, स्वामीजी के मदिर के पेष्कार, स्थानीय मदिरों के पेष्कार, देवस्थान न्यायविभागाधिकारी, आस्थानपंडितजी, बडे और छोटे जिय्यंगार और मदिरों के मिराशिदार।

भक्तजनों की भलाई के लिए नारायणवन में दो कल्याण मंडपों का निर्माण कराने के निर्णय लिया गया।

देवस्थान के क्यू इन्स्पेक्टर श्री एम. त्यागराजुजी ने जो खोये हुए धन को असली व्यक्ति को पहुँचाया, उनकी ईमानदारी की प्रशंसा करते हुए रु० २५ का पुरस्कार देने का निर्णय लिया गया।

देवस्थान के कई मकानों को निर्माण कराने के सिलसिले में आवश्यक ४ जूनियर इजनीर, २ अटेण्डर तथा डिजाइनर के पदों को लिए एक साल के भर्ती करने का निर्णय लिया गया।

तिरुमल के अतिथि भवन के कमरों का भाड़ा प्रति दिन रु० १२ से रु० १६ को बढाने का निर्णय लिया गया।

हैदराबाद के आगम शास्त्र महाविद्यालय के देवस्थान को अधीन करके चलाने का निर्णय लिया गया।

आन्ध्र सरकार के देवादाय विभाग से चलानेवाले शिल्पकला-विद्यालय को स्वाधीन स्वाधीन करके चलाने का निर्णय लिया गया।

श्रीकाकुल जिले के पातपट्टणम् तालुका के मुखलिंग में तथा भद्राचलम् तालुका के पर्णशाला में देवस्थान के धर्मशालाओं को बनाने का निर्णय लिया गया।

गुँटूर के रामनाम क्षेत्र में श्री कोदंडरामस्वामीजी के मंदिर में प्रार्थना मंडप के निर्माण के लिए रु० ५०,००० दान देने का निर्णय लिया गया।

विजयवाडा के सिद्धार्थ कालेज के देवस्थान की प्रार्थना मदिर के बारे में जो नियम बनाये गये थे, उन्हीं शर्त पर गुडिवाडा के ए. एन आर. कालेज में प्रार्थना मदिर बनवाने का निर्णय लिया गया।

तू० गो० जिले के राजमंड्री में देवस्थान के नाम पर स्नान घाट (यात्रियों को नहाने सुविधा केलिए बनाने का) निर्णय लिया गया।

श्री वेंकटेश्वर कलाशाला, नई दिल्ली के प्रबंध मंडल में अब के सदस्यों के अतिरिक्त देवदाय कमीशनर तथा रेविन्यू विभाग के सचिव को भी शामिल कराने का निर्णय लिया गया।

श्री बुलुसु वेंकटेश्वरुलुजी कृत वाल्मीकी रामायण ग्रंथ को रु० ५,००० की आर्थिक सहायता देने का निर्णय लिया गया।

बापट्ला तालुका के तूफान पीडित जगहों में बनाये जानेवाले भगवान के हरएक मंदिर के निर्माण के लिए रु० १०,००० दान देने का निर्णय लिया गया।

वुडलाण्ड्स होटल के अधीन रही मकान को स्वाधीन करके, उसे अतिथि भवन के रूप मे परिवर्तन कराने का निर्णय लिया गया।

भगवान के दर्शन के लिए आनेवाले मठाधिपति, पीठाधिपति या अन्य स्वामीजी को मुफ्त आवास, भोजन या प्रयाण तथा दर्शन की सुविधा का सम्पूर्ण अधिकार कार्यनिर्वहणाधिकारी को देने का निर्णय लिया गया।

मासिक राशिफल

अप्रेल १९७९ *डा० डी. अर्कसोमयाजी, तिरुपति.

मेष
(आश्वनी, भरणी, कृत्तिका केवल पाद-१)

राहु के द्वारा भयादोलन, शनि से धनहानि, झगडे तथा सतान के प्रति आदोलन। गुरु के द्वारा रिश्तेदारो से आदोलन। कुज से आदोलन, धन नष्ट, तथा नेत्र पीडा या पत्नी का असतोष। बुध से अस्वस्थता, अपमान या झगडे। मगर १७ तक शुक्र अनुकूल है, जिस से धन प्राप्ति, नूतन वस्त्र प्राप्ति और अन्य ग्रहो की पीडाओ का निवारण। सूर्य के द्वारा २४ से महीने के अत तक, उदर पीडा या धन हानि या प्रयास व प्रयाण। देवाराधना शुभप्रद।

वृषभ
(कृत्तिका पाद-२, ३, ४, रोहिणी, मृगशिरा पाद-१,२)

राहु के द्वारा आदोलन, शनि से धन नष्ट, मित्र या रिश्तेदारो से विच्छिन्नता। गुरु से निराशा। कुज के द्वारा धन प्राप्ति व विजय। बुध के द्वारा धन-प्राप्ति, नये मित्र, प्रेम तथा नूतन वस्त्र व वाहन प्राप्ति। रवि १४ तक लाभ प्रद तथा प्रयत्नो मे विजय। उसके बाद स्तब्धता। शुक्र के द्वारा १७ तक झगडे, अपमान, बाद को धन तथा मित्र प्राप्ति।

मिथुन
(मृगशिरा पाद-३, ४, आर्द्रा, पुनर्वसु पाद-१,२,३)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति। शनि के द्वारा धन प्राप्ति, नूतन वस्त्र प्राप्ति तथा नौकर, गृहोपकरण तथा वाहन-प्रप्ति। गुरु से धन-प्राप्ति। कुज से धन-प्राप्ति। शुक्र के द्वारा १७ तक प्रेम, नूतन वस्त्र प्राप्ति, दैविक कार्य उसके बाद झगडे, अपमान। बुध से विजय, धन-प्राप्ति तथा प्रेम। रवि से स्वास्थ्य, गौरव तथा विजय प्राप्ति।

कर्काटक
(पुनर्वसु पाद-४, पुष्य तथा आश्लेष)

राहु के द्वारा धन नष्ट। शनि के द्वारा धन-हानि। गुरु से झगडे, धन हानि तथा अपमान। कुज के द्वारा धन हानि तथा अपमान। बुध से कार्यो मे रुकावट। शुक्र के द्वारा धन प्राप्ति, नूतन वस्त्र प्राप्ति, प्रेम तथा घरेलू संतोष और अन्य ग्रहो की पीडाओ का निवारण। रवि से पहले भाग मे अस्वस्थता या कार्यो मे असफलता या धनहानि मगर दूसरे भाग मे सभी कार्यों में विजय।

सिंह
(उत्तर फल्गुनि पाद-१, मख, पूव फल्गुनि)

राहु के द्वारा आदोलन। शनि के द्वारा शारीरक चोट या अपने लोगो को अपकार या बाधाजनक प्रयाण या सतान से विरोध या धनहानि। गुरु के द्वारा प्रयास तथा प्रयाण। कुज से धनहानि तथा अपमान। बुध के द्वारा धन, नूतन वस्त्र प्राप्ति तथा सतान प्राप्ति। शुक्र के द्वारा १७ तक स्त्री के कारण आदोलन, बाद मे नूतन वस्त्र प्राप्ति या प्रेम व्यवहार या गृह प्राप्ति। रवि के द्वारा पहले भाग मे अस्वस्थता या स्त्री को असतोष बाद मे धननष्ट तथा निराशा।

कन्या
(उत्तरा पाद-२,३,४, हस्त चित्त पाद-१, २)

राहु तथा शनि के द्वारा आदोलन। गुरु के द्वारा अधिक धन प्राप्ति। कुज के द्वारा पत्नी से झगडे या उदर पीडा या नेत्र पीडा। बुध के द्वारा झगडे। शुक्र के द्वारा पहले १७ दिनों में अस्वस्थता, अपमान, बाद मे स्त्री के कारण आदोलन। शनि के द्वारा उदर पीडा या स्त्री को असतोष।

तुला
(चित्त पाद-३, ४, स्वाति, विशाख पाद-१, २, ३)

राहु के द्वारा सुख। शनि के द्वारा धन प्राप्ति तथा प्रेम व्यवहार। गुरु के द्वारा धनहानि या अपमान। कुज के द्वारा अधिक धन प्राप्ति। बुध के द्वारा विजय, उच्च पद प्राप्ति। शुक्र के द्वारा पहले १७ दिनो में रिश्तेदारो का आगमन, बडो की प्रशसा, धन प्राप्ति, मित्र व सतान प्राप्ति मगर बाद मे अस्वस्थता, अपमान। रवि के द्वारा पहले भाग स्वस्थता, तथा विजय मगर बाद मे प्रयाण या उदर पीडा।

वृश्चिक
(विशाख पाद-४, अनुराधा, ज्येष्ठ)

राहु के द्वारा झगडे। शनि के द्वारा धन हानि, अपमान। गुरु के द्वारा धन प्राप्ति, विजय, खाद्यपदार्थ तथा सेवक जन या सतान प्राप्ति की सभावना। कुज के द्वारा अस्वस्थता या झगडे या सतान के प्रति आदोलन। शुक्र के द्वारा धन, मित्र तथा रिश्तेदारो का आगमन। बडो की प्रशसा व सतान प्राप्ति। रवि के द्वारा

महीने के पहले भाग मे अस्वस्थता तथा शत्रु-भय मगर बाद में स्वस्थता तथा विजय ।

धनुः
(मूल, पूर्वाषाढ, उत्तराषाढ पाद-१)

राहु के कारण पापकार्य । शनि के कारण अस्वस्थता या झगडे या बुरे व्यबहार । गुरु के द्वारा अस्वस्थता, प्रयास तथा प्रयाण । कुज के द्वारा बूरे मित्रो से हानि या अस्वस्थता या बुखार । बुध के द्वारा गृह प्राप्ति । शुक्र के द्वारा धन प्राप्ति तथा नूतन वस्त्र प्राप्ति या गौरव या विजय । रवि के द्वारा अस्वस्थता तथा शत्रुओ का डर ।

मकर
(उत्तराषाढ पाद-२, ३, ४ श्रवण, धनिष्ठ पाद-१, २)

राहु के द्वारा आदोलन । शनि के द्वारा रिश्तेदारो से विच्छिन्नता । गुरु के द्वारा धन प्राप्ति, प्रेम व्यवहार । कुज के द्वारा सतान से या आकस्मिक धन प्राप्ति । बुध के द्वारा मित्र प्राप्ति । अपने बुरे व्यवहार से नौकरी मे आदोलन या शत्रुओ का डर । गुरु के द्वारा पूरा महीना सानुकूलता, धन प्राप्ति, विजय, खाद्य-पदार्थ या विजय, नूतन वस्त्र प्राप्ति या सतान प्राप्ति की सभावना । रवि के द्वारा महीने के पहले भाग में धन प्राप्ति, विजय या उच्च पद प्राप्ति बाद को दूसरे भाग मे अस्वस्थता ।

कुंभ
(धनिष्ठ पाद-३,४, शतभिष, पूर्वाभाद्रा पाद-१, २, ३.)

राहु के द्वारा झगडे । शनि के द्वारा प्रयाण । गुरु के द्वारा मनशाति मे भग । कुज के द्वारा नौकरी मे झगडे या शत्रुओ से या अस्वस्थता मे या चोरी होने से डर । बुध के द्वारा अपमान । शुक्र के द्वारा प्रेम व्यवहार या धन प्राप्ति, गौरव, खाद्य पदार्थ व सतान प्राप्ति । रवि के द्वारा महीने के पहले भाग मे धन हानि तथा नेत्र पीडा । मगर दूसरे भाग मे धनप्राप्ति तथा उच्च पद की प्राप्ति ।

मीन
(पूर्वाभाद्र पाद-४, उत्तराभाद्र, रेवती)

राहु के द्वारा धन प्राप्ति । शनि के द्वारा स्वस्थता तथा विजय । गुरु के द्वारा धन प्राप्ति, नूतन वस्त्र प्राप्ति या वाहन प्राप्ति या सतान प्राप्ति या गृह प्राप्ति । बुध के द्वारा दुरा-लोचन, शत्रुओ के कारण धनहानि । शुक्र भी महीने के १७ तक स्तब्ध । मगर बाद मे प्रेम व्यवहार तथा खुशी । महीने के पहले भाग मे रवि के द्वारा धन हानि या उदर पीडा या प्रयाण तथा दूसरे भाग मे धन हानि, धोखे बाजी या नेत्र पीडा ।

ग्राहकों से निवेदन

१. सप्तगिरि पत्रिका को प्राप्त करने केलिए नये तथा पुराने ग्राहकों को एक महीने के पूर्व ही मास के १५ वी तारीख के पहिले ही चदा रकम भेजना चाहिए । उदाहरणार्थ यदि आप जून मास से सप्तगिरि प्राप्त करना चाहें तो १५, मई के पूर्व ही चंदा रकम भेजें । उसके बाद भेजने वाले ग्राहकों को सुविधानुसार पत्रिका भेजी जायगी, निश्चित नहीं । उस महीने की पत्रिका के अभाव में अगले महीने से पत्रिका भेजी जायगी ।

२. चंदा रकम कृपया मार्केटिंग अफीसर, ति. ति. दे. प्रेस कम्पाउण्ड, तिरुपति के पते पर ही भेजें ।

३. सप्तगिरि अथवा ति. ति. देवस्थान के अन्य प्रकाशन संबंधी विवरण केलिए कृपया निम्नलिखित पते पर ही पत्र व्यवहार करें :—

मार्केटिंग अफीसर,
प्रकाशन विभाग,
ति. ति दे प्रेस कम्पाउण्ड,
तिरुपति

(पृष्ठ ३७ का शेष)

राल्लपल्लि अनंतकृष्ण शर्माजी की श्रद्धांजलि

खेद की बात है कि बहुमुख मेधावी श्री राल्ल-पल्लि अनंत कृष्ण शर्माजी दि ११-३-७९ को स्वर्गस्थ हुआ । दि. २०-३-७९ को देवस्थान तथा तिरुपति के निवासियो ने सताप सभा की आयोजना की ।

देवस्थान के कार्य निर्वहणाधिकारी श्री पी वी आर. के प्रसादजी ने अपने संताप प्रकट करते हुए श्रीमान् अनतकृष्ण शर्माजी के गुणों की प्रशंसा की । देवस्थान की ओर से उनकी सेवाओ की प्रशंसा करते हुए देनेवाले पुरस्कार के लिए ति ति देवास्थान के न्यास मण्डल की अनुमति लेनी है । लेकिन उनकी अस्वस्थता को दृष्टि में रखकर, उनके घर जाकर पहले ही पुरस्कार से सामानित करने का अवसर मिलना हर्षदायक है । यह सब भगवान बालाजी की ही लीला गोचर हो रही है ।

सर्वश्री गौरिपेद्दी रामसुब्बशर्माजी, एन सी. नरसिंहाचार्युलुजी, श्री कामिसेट्टि श्रीनिवासुलसेट्टि तथा श्री जानकीरामनजी ने उनकी सेवाओं तथा प्रतिभा की प्रशंसा की ।

EDITED AND PUBLISHED ON BEHALF OF THE T. T. DEVASTHANAMS BY K. SUBBA RAO, M A AND PRINTED AT T. T D. Press, By M. Vijayakumar Reddy, Manager, T T D. Press, Tirupati

ति ति. देवस्थान के आध्वर्य में तृतीय बास्केट-बाल क्रीडा स्पर्धा चार दिनों तक मनायी गयी।
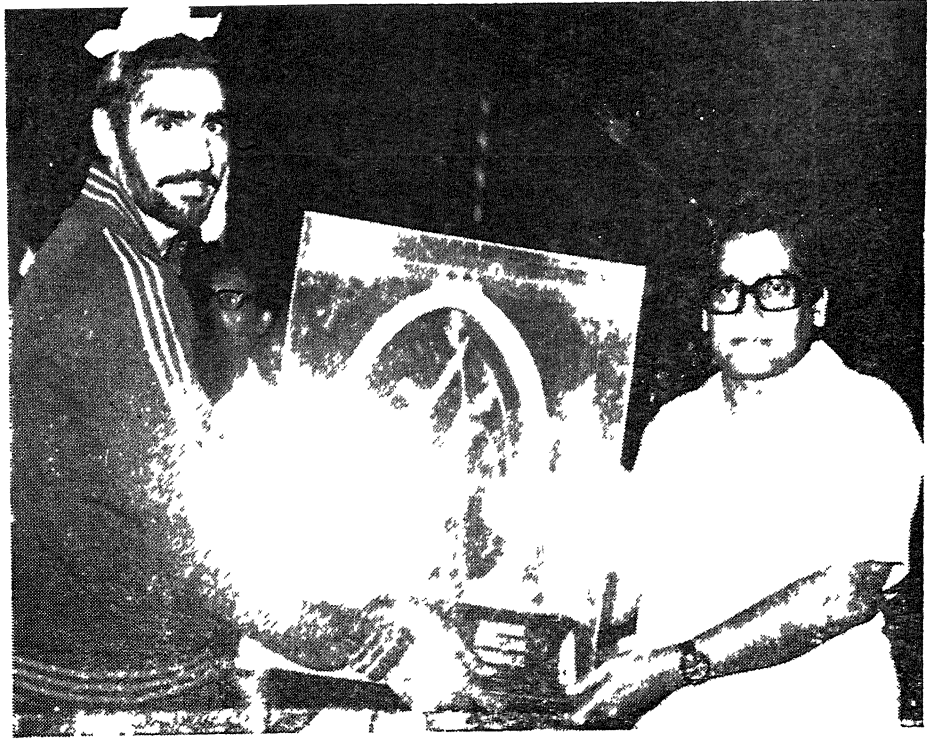
हैदराबाद आर्टिलरी सेन्टर विजेताओ के केप्टन को पुरस्कार प्रदान करते हुए ति ति देवस्थान के इजनीयर श्री आर रंगराजुजी

बिजली के दीपो से सजाया गया बास्केटबाल क्रीडा क्षेत्र
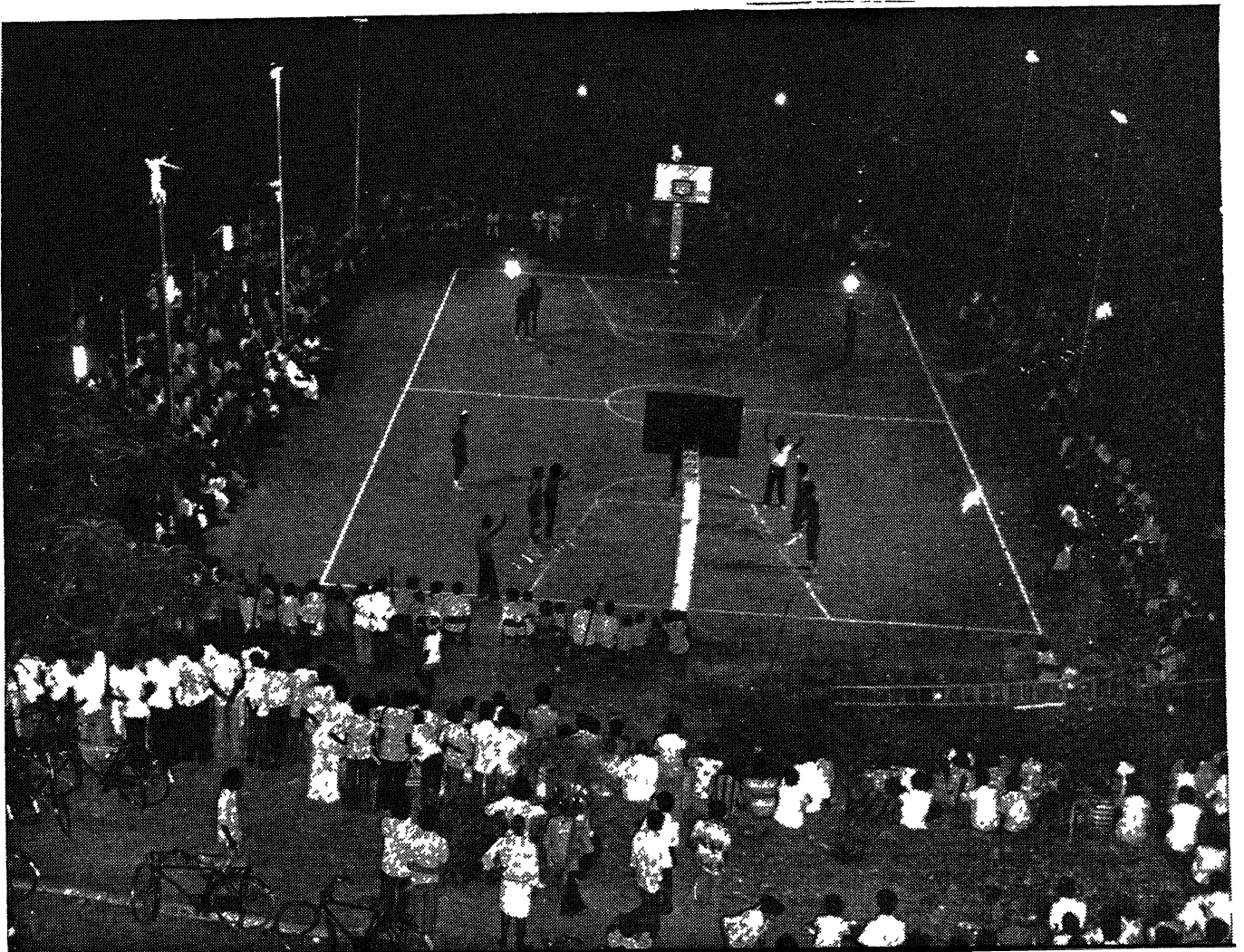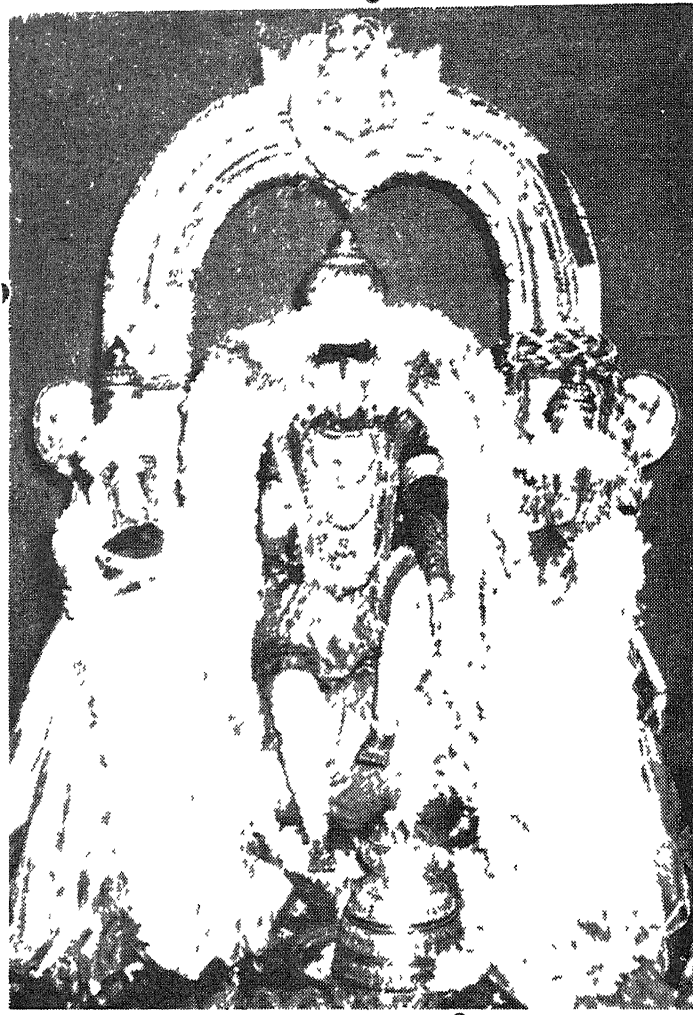
नागलापुर का दर्शन कीजिए!!

श्री वेदवल्ली सहित श्री वेदनारायण स्वामीजी का ब्रह्मोत्सव, नागलापुर

दिनाक	वार	प्रातः	रात
११-४-७९	बुधवार	——	सेनाधिपति का उत्सव, अकुरार्पण
१२-४-७९	गुरुवार	तिरुचि उत्सव, ध्वजारोहण	बडा शेष वाहन
१३-४-७९	शुक्रवार	छोटा शेष वाहन	हसवाहन
१४-४-७९	शनिवार	सिंहवाहन	मोती के शामियाने का वाहन
१५-४-७९	रविवार	कल्पवृक्ष वाहन	सर्वभूपाल वाहन
१६-४-७९	सोमवार	मोहिनी अवतार	गरुड वाहन
१७-४-७९	मगलवार	हनुमान वाहन, शाम को वसतोत्सव	गज वाहन
१८-४-७९	बुधवार	सूर्यप्रभा वाहन	चन्द्रप्रभा वाहन
१९-४-७९	गुरुवार	रथोत्सव	अश्व वाहन
२०-४-७९	शुक्रवार	पालकी उत्सव, चक्रस्नान	ध्वजावरोहण